सूचना
यदी आप को नियमित दैनिक सुफ्फा का अंक प्राप्त नही हो रहा है या फिर आप दैनिक सुफ्फा हासिल करना चाहते है तो इस नम्बर पर संपर्क करे- 7620469536
औरंगज़ेब हुसैन (कार्यकारी संपादक)

epaper:suffahdailynews.com

दैनिक सुफ्फा

आम आदमी की आवाज़..।

मुख्य संपादकः सज्जाद हुसैन अल्ताफ हुसैन
R.N.I. MAHHIN/2017/70719

Email:suffaakl@gmail.com ■ साल ९ वा ■ अंक २३२ ■ मंगलवार १४ अक्टूबर २०२५ ■ अकोला ■ पृष्ठ ८ ■ मूल्य ४ रूपये

सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद भी जारी 'बुलडोज़र न्याय' : गुजरात के बहियाल में मुसलमानों के घर और दुकानें ध्वस्त

नई दिल्ली -
सुप्रीम कोर्ट द्वारा बुलडोज़र कार्रवाई को लेकर जारी किए गए स्पष्ट दिशा-निर्देशों के बावजूद, गुजरात के ढोलका तालुका के बहियाल गाँव में ९ अक्टूबर को प्रशासन ने करीब १८० घरों और दुकानों को जमींदोज़ कर दिया — जिनमें अधिकांश मुस्लिम समुदाय के थे। अधिकारियों ने इसे 'अतिक्रमण विरोधी अभियान' बताया, लेकिन स्थानीय लोगों और नागरिक अधिकार संगठनों का कहना है कि यह 'राज्य प्रायोजित प्रतिशोध' और 'बुलडोज़र न्याय' का एक और उदाहरण है।

यह कार्रवाई उस सांप्रदायिक तनाव के कुछ ही दिनों बाद हुई जो नवरात्रि के दौरान दो व्हाट्सएप स्टेटस — 'आई लव मुहम्मद' और 'आई लव महादेव' — के वायरल होने से भड़का था। इस हिंसा के बाद लगभग ६० लोगों को हिरासत में लिया गया और कई मुस्लिम परिवारों ने आरोप लगाया कि पुलिस ने एकतरफ़ा कार्रवाई करते हुए सिर्फ़ उनके घरों को निशाना बनाया।

१८६ संपत्तियाँ 'अवैध' घोषित, १७८ ध्वस्त

इंडियन एक्सप्रेस के अनुसार, स्थानीय प्रशासन ने कुल १८६ संपत्तियों को अवैध घोषित किया, जिनमें से १७८ को ध्वस्त कर दिया गया। आठ मालिकों ने उच्च न्यायालय में याचिका दायर की, जिससे उनके घर फिलहाल बचे हुए हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि तोड़फोड़ से पहले उन्हें केवल एक दिन का नोटिस दिया गया, जबकि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुसार किसी भी विध्वंस से पहले प्रभावित व्यक्ति को कम से कम १५ दिन का समय दिया जाना चाहिए।एक सिलाई व्यवसायी मुस्तक़ीन मलिक ने बताया, 'हमसे कहा गया कि बुलडोज़र कल आएगा। हमारे पास न अपील करने का वक़्त था, न बचाने का तरीका। बीस दुकानें थीं सब मलबे में बदल गईं।'

एसोसिएशन फॉर प्रोटेक्शन ऑफ सिविल राइट्स की हालिया रिपोर्ट बताती है कि 'आई लव मुहम्मद' अभियान से जुड़े मामलों में देशभर में ४,५०५ मुसलमानों पर एफआईआर दर्ज की गई हैं, जिनमें से २६५ उत्तर भारत में हैं। बहियाल की घटना इस व्यापक पैटर्न की कड़ी मानी जा रही है।मानवाधिकार कार्यकर्ताओं का कहना है कि यह प्रवृत्ति न केवल संवैधानिक अधिकारों का हनन है, बल्कि यह एक समुदाय विशेष को दंडित करने का औजार बन चुकी है।

'सिर्फ़ मुस्लिम मोहल्लों को निशाना बनाया गया'

ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि तोड़फोड़ से पहले पुलिस ने रात में मुस्लिम घरों में दबिश दी, युवकों को हिरासत में लिया और महिलाओं के साथ बदसलूकी की। कुछ गवाहों का कहना है कि हिंदू संगठनों के सदस्य पुलिस की मौजूदगी में घरों में घुसे और संपत्ति को नुकसान पहुँचाया।

सुप्रीम कोर्ट के आदेश की अवहेलना?

नवंबर २०२४ में मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई की अध्यक्षता वाली पीठ ने अपने ऐतिहासिक फैसले में कहा था कि बिना उचित कारण बताओ नोटिस और जवाब देने का अवसर दिए किसी की संपत्ति गिराना 'कानून के शासन का उल्लंघन' है। कोर्ट ने कहा था कि कार्यपालिका 'न्यायाधीश, जूरी और जल्लाद — तीनों नहीं हो सकती।' इसके बावजूद, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली और अब गुजरात जैसे भाजपा-शासित राज्यों में पुलिस कार्रवाई के बाद घरों और दुकानों को ध्वस्त करने की घटनाएँ जारी हैं।

एक नजर

कांग्रेस में शामिल हुए पूर्व आईएएस, धारा ३७० को लेकर दिया था इस्तीफा

नई दिल्ली -
पूर्व आईएएस अधिकारी कन्नन गोपीनाथन ने १३ अक्टूबर को कांग्रेस पार्टी ज्वाइन कर ली है। गोपीनाथन २०१२ बैच के उश्ळऊ कैडर के अधिकारी थे। पार्टी ज्वाइन करने के बाद गोपीनाथन ने कांग्रेस ज्वाइन करने की वजह बताई है। गोपीनाथन के कहा कि २०१९ में रिजाइन किया, उस वक्त एक चीज क्लियर था कि देश में जो सरकार जिस दिशा में देश को लेकर जाना चाहता है वो सही दिशा नहीं है वो गलत है। वह गलत क्या है वह क्लियर था और गलत के खिलाफ लड़ना है यह भी क्लियर था, लेकिन अल्टरनेटिव क्या है वो उस जर्नी तक पहुंचने में मैं मेरा खुद भी बहुत मुझे खुद भी क्लेरिटी की जरूरत थी, तो कई सारे ८० ९० जिलों में घूमे ट्रैवल किए लोगों से बात किया कई सारे लीडर्स से मिले तब यह क्लियर हुआ कि जिस दिशा में देश को मैं चाहता हूं कि चले वो कांग्रेस पार्टी लेके जा सकती है।

दिमागी बुखार से २३ की मौत, ३ साल का बच्चा हुआ संक्रमित

तिरुवनंतपुरम-
केरल के कन्नूर जिले के थाय्यिल निवासी साढ़े ३ साल का बच्चा दिमागी बुखार (अमीबिक इन्फेक्शन) से संक्रमित मिला है, जिसे कोझिकोड के गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया है. डॉक्टरों ने पुष्टि की है कि बच्चे को ३ दिन से बुखार था और उसे दौरे पर पड़ रहे थे. फिलहाल उसकी हालत स्थिर है और उसने अन्य मरीजों से अलग रखा गया है, क्योंकि दिमागी बुखार संक्रमण है, जो नाक के जरिए फैलता है, जिससे मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी का संक्रमण हो सकता है.बता दें कि केरल की स्वास्थ्य मंत्री वीना जॉर्ज ने बीते दिन ही केरल में फैले दिमागी बुखार को लेकर ब्रीफ किया था. उन्होंने बताया था कि कन्नूर, कोल्लम, तिरुवनंतपुरम, मलप्पुरम और कोझिकोड में बीमारी फैली है. १०४ मरीज रिपोर्ट हुए हैं, जिनमें से २३ मरीजों की मौत हो चुकी है और ८१ मरीज अस्पताल में जिंदगी और मौत से जूझ रहे हैं. केरल में दिमागी बुखार (एमोबिक एन्सेफलाइटिस) के साथ-साथ जापानी इंसेफेलाइटिस भी फैला है, जो एक प्रकार का वायरल इन्फेक्शन ही है, जो गर्म और ताजा पानी में पनपता है.कुंओं के क्लोरीनीकरण के आदेश मंत्री ने बताया था कि दोनों संक्रमण बच्चों और कमजोर इम्युनिटी वाले लोगों के लिए खतरनाक है.

गाज़ा शिखर सम्मेलन से पहले हमास और इज़राइल ने कैदियों की अदला-बदली शुरू की

नई दिल्ली -
गाज़ा में चल रहे युद्ध के बीच एक बड़ी खबर सामने आई है। हमास ने गाज़ा पट्टी में बंधक बनाए गए सभी २० जीवित बंदियों को रिहा कर दिया है। इसके बदले में इज़राइल ने लगभग २,००० फिलिस्तीनी कैदियों को रिहा करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। यह कदम दोनों पक्षों के बीच हुए युद्धविराम समझौते का हिस्सा है।

सोमवार सुबह जब यह खबर फैली कि सात इज़राइली बंदियों के पहले समूह को रेड क्रॉस (घ्ढ़ींण) को सौंप दिया गया है, तो पूरे इज़राइल

में खुशी की लहर दौड़ गई। बाद में इज़राइली सेना ने पुष्टि की कि ७ अक्टूबर २०२३ को अगवा किए गए १३ अन्य बंदियों को भी गाज़ा से इज़राइल लाया गया है। ये सभी बंदी दो साल से अधिक समय से गाज़ा में कैद थे।इज़राइल में जहां परिवार अपने प्रियजनों से मिलने को बेताब हैं, वहीं ओफर सैन्य जेल (वेस्ट बैंक) के बाहर बसें तैनात की गई हैं, ताकि रिहा होने वाले फिलिस्तीनी कैदियों को वहां से ले जाया जा सके।

प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के कार्यालय ने कहा कि कैदियों की रिहाई तभी होगी जब यह पूरी तरह पुष्टि हो जाए कि सभी इज़राइली बंदी सुरक्षित अपने देश लौट आए हैं।इज़राइल के विदेश मंत्रालय ने एक्स (पहले ट्विटर) पर पोस्ट करते हुए रिहा किए गए बंदियों की पहचान जारी की गाय गिल्बोआ दलाल **(शेष पृष्ठ ७ पर)**

सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी के 'वोट चोरी' मामले की एसआईटी जांच की मांग खारिज की

नई दिल्ली-
सुप्रीम कोर्ट ने कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के 'वोट चोरी' के आरोपों की जांच के लिए विशेष जांच दल (एसआईटी) बनाने की मांग को खारिज कर दिया है।यह याचिका अधिवक्ता रोहित पांडे ने दाखिल की थी। उन्होंने कोर्ट से मांग की थी कि राहुल गांधी के आरोपों की जांच के लिए एसआईटी गठित की जाए। लेकिन सुप्रीम कोर्ट की न्यायमूर्ति सूर्यकांत की पीठ ने कहा कि याचिकाकर्ता चाहे तो इस मामले में भारत के चुनाव आयोग (ण्ड्) से संपर्क कर सकता है। राहुल गांधी ने ७ अगस्त को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में आरोप लगाया था कि भाजपा और चुनाव आयोग ने मिलकर 'बड़े पैमाने पर वोट चोरी' की है। उन्होंने कहा था कि बेंगलुरु सेंट्रल लोकसभा सीट के महादेवपुरा विधानसभा क्षेत्र में एक लाख से ज़्यादा फर्जी वोट हैं। उन्होंने महाराष्ट्र और हरियाणा के हाल के चुनावों में भी इसी तरह की अनियमितताओं का आरोप लगाया था।राहुल गांधी के आरोपों के बाद, चुनाव आयोग ने उनसे कहा था कि वे शपथ के तहत साक्ष्य पेश करें।

गांधी के अनुसार

- 11,965 डुप्लीकेट मतदाता थे
- 40,009 फर्जी या अवैध पते वाले मतदाता
- 10,452 एक ही पते पर दर्ज मतदाता
- 4,132 ग़लत फोटो वाले मतदाता
- 33,692 फॉर्म-६ का दुरुपयोग करके बने नए मतदाता थे।

कांग्रेस नेता प्रियांक खरगे ने आरएसएस पर फिर साधा निशाना, बोले- संघ के हाथों की कठपुतली है भाजपा

नई दिल्ली -
कर्नाटक सरकार में मंत्री और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के बेटे प्रियांक खरगे ने सोमवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) पर कई सारे गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने आरोप लगाते हुए पूछा कि आरएसएस दुनिया का सबसे गुप्त संगठन है, जो न तो रजिस्टर्ड है और न ही पारदर्शिता दिखाता है, फिर भी इसे हर साल सैकड़ों करोड़ रुपये कहा से मिलते हैं? खरगे ने कर्नाटक मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को पत्र लिखकर मांग की है कि राज्य की सभी सरकारी इमारतों और संस्थानों में आरएसएस की गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाया जाए। उनका कहना है कि आरएसएस की सोच संविधान और भारत की एकता के खिलाफ है।पत्रकारों से बातचीत के दौरान प्रियांक खरगे ने सवाल किया कि आरएसएस ने १०० साल में देश के लिए क्या योगदान दिया है? क्या कारण है कि इसका प्रमुख इतना सुरक्षा घिरा लेकर चलता है? अगर यह ऱ्उध है तो पंजीकरण दस्तावेज क्यों नहीं दिखाए जाते? ३०० से ४०० करोड़ रुपये कहां से और कैसे आ रहे हैं?

भाजपा आरएसएस की कठपुतली- खरगे

कांग्रेस नेता प्रियांक खरगे ने यह भी कहा कि भाजपा, आरएसएस की कठपुतली है। अगर आरएसएस नहीं रहेगा तो भाजपा भी खत्म हो जाएगी। उन्होंने कहा कि वे हिंदू धर्म के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन आरएसएस की विचारधारा के खिलाफ हैं क्योंकि यह समानता में विश्वास नहीं करती और संविधान की जगह 'मनुस्मृति' को मानती है।

इस दौरान उन्होंने आरएसएस के लाठी मार्च पर भी सवाल उठाया और कहा कि बिना पुलिस की अनुमति के सार्वजनिक स्थानों पर हथियारों जैसे डंडों के साथ प्रदर्शन करना बच्चों और युवाओं के मन पर नकारात्मक असर डाल सकता है।खरगे ने यह भी आरोप लगाया कि सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों में आरएसएस की शाखाएं चल रही हैं जहां बच्चों को भड़काऊ बातें सिखाई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि जब समाज में नफरत फैलाने वाली ताकतें सिर उठाएं, तो संविधान हमें उन्हें रोकने का अधिकार देता है, ताकि देश की एकता और धर्मनिरपेक्षता बनी रहे।

बच्चों की मौत से लेकर कंपनी के बंद होने तक: मिलावटी कफ सिरप कांड की पूरी कहानी

निरीक्षण में चौंकाने वाली बातें सामने आई

- ३०० से अधिक नियमों का उल्लंघन पाया गया।
- फैक्ट्री में सफाई की हालत खराब थी,
- गुणवत्ता जांच ठीक से नहीं की जा रही थी,
- रिकॉर्ड-कीपिंग में गड़बड़ी थी, और
- Good Manufacturing Practices और Good Laboratory Practices के गंभीर उल्लंघन पाए गए।

अहमदाबाद -
देशभर में २० से ज़्यादा बच्चों की मौत के बाद कोल्ड्रिफ नाम की कफ सिरप पर बवाल मच गया है। लोग सवाल पूछ रहे हैं कि आखिर इन मौतों का असली जिम्मेदार कौन है — डॉक्टर, दवा कंपनी या सिस्टम की लापरवाही?

६ अक्टूबर को स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय ने बच्चों के इलाज के लिए एक नई सलाह जारी की। इसमें कहा गया कि दो साल से कम उम्र के बच्चों को खांसी और सर्दी की दवाएं नहीं दी जानी चाहिए क्योंकि यह उनके लिए नुकसानदेह हो सकती हैं।

क्या हुआ था मामला

मामला शुरू हुआ जब मध्य प्रदेश में एक के बाद एक बच्चों की मौत की खबरें आईं। सभी बच्चे कोल्ड्रिफ कफ सिरप पी रहे थे, जो तमिलनाडु के कांचीपुरम में स्थित श्रीसन फार्मास्युटिकल्स कंपनी बनाती है।जांच के लिए सिरप के सैंपल लैब में भेजे गए, जहां बड़ा खुलासा हुआ इस दवा में डायथिलीन ग्लाइकॉल नाम का जहरीला रसायन मिला, जिसकी मात्रा ४८% से ज़्यादा थी। जबकि दवा में इसकी अनुमति केवल ०.१% तक होती है।

यह रसायन बहुत ज़हरीला होता है और इसका इस्तेमाल आमतौर पर ब्रेक फ्लूइड, एंटीफ्रीज, पेंट, प्लास्टिक और औद्योगिक उत्पादों में किया जाता है। दवाओं में इसे सॉल्वेंट (घोलक) के रूप में गलती से या सस्ती कीमत के कारण मिलाया गया था।

रिपोर्ट सामने आते ही कई राज्यों ने कोल्ड्रिफ सिरप पर प्रतिबंध लगा दिया। केंद्र सरकार ने सभी राज्यों को निर्देश दिया कि दो साल से कम उम्र के बच्चों को खांसी या सर्दी की कोई दवा न दी जाए। इसके बाद, ८ से १० अक्टूबर के बीच तमिलनाडु औषधि नियंत्रण विभाग ने श्रीसन फार्मास्युटिकल्स की फैक्ट्री में औचक छापा मारा।

गिरफ्तारी और छापेमारी

११ अक्टूबर को मध्य प्रदेश की विशेष जांच टीम ने कंपनी के मालिक राजा रंगनाथन को गिरफ्तार कर लिया। उन पर गैर-इरादतन हत्या और दवा सुरक्षा कानूनों के उल्लंघन का आरोप लगाया गया।यह गिरफ्तारी तब हुई जब मध्य प्रदेश सरकार ने उनकी गिरफ्तारी पर २०,००० का इनाम घोषित किया था। पुलिस ने आरोप लगाया कि कंपनी ने गुणवत्ता जांच किए बिना जहरीली दवा बाज़ार में बेच दी, जिससे बच्चों की मौत हुई। १३ अक्टूबर को प्रवर्तन निदेशालय ने कंपनी के ठिकानों पर धनशोधन निवारण अधिनियम के तहत छापेमारी की। ईडी को शक है कि मिलावटी दवा की बिक्री से जुड़े लेन-देन में काले धन और फर्जी बिलिंग का इस्तेमाल हुआ।

इज्तेमाई शादियां

हुसैनी मेमोरियल सोशल वेलफेअर सोसायटी अकोला,
Regd. No. MAH 8038/F7180

सामुहिक विवाह का 21 वाँ आयोजन

हर साल की तरह इस साल भी हुसैनी मेमोरियल सोशल वेलफेअर सोसायटी अकोला, द्वारा सामूहिक विवाह का आयोजन किया गया है। इच्छुक व्यक्तीयों से निवेदन है के नीचे दिये फोन नंबर पर संपर्क करें!

सोमवार 02 फरवरी 2026
समय: सुबह 10 बजे
आबासाहेब खेडकर हॉल
रामदास पेठ, अकोला

कार्यालय (Office)
अलतॉफ हुसेन ॲण्ड कंपनी, जनता भाजी बाजार, अकोला
9822888749 सुबह 10 से 1 बजे तक

15 NOV से शादियों की बुकिंग शुरु है

'अमानवीय': १५४ रिहा किए गए फ़िलिस्तीनी कैदियों को इज़राइल ने विदेशी निर्वासन में भेजा

नई दिल्ली (वृत्तसंस्था)
इज़राइल द्वारा गाज़ा युद्धविराम समझौते के तहत रिहा किए जा रहे फ़िलिस्तीनी कैदियों के परिवारों का कहना है कि उनकी लंबे समय से प्रतीक्षित आज़ादी कड़वी-मीठी है। यह कड़वी इसलिए है क्योंकि उन्हें पता चला कि उनके प्रियजनों को तीसरे देशों में भेज दिया जाएगा।

फिलीस्तीनी कैदियों के मीडिया कार्यालय ने बताया कि सोमवार को कम से कम १५४ फ़िलिस्तीनी कैदी रिहा किए गए, लेकिन उन्हें इज़राइल द्वारा निर्वासित किया जाएगा। ये कैदी इज़राइली जेलों में बंद २५० कैदियों और गाज़ा पट्टी से युद्ध के दौरान पकड़े गए लगभग १,७०० फ़िलिस्तीनियों में शामिल हैं। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, इनमें से कई को 'जबरन गायब' किया गया था। वहीं, हमास और अन्य फ़िलिस्तीनी समूहों ने २० इज़राइली बंदियों को रिहा किया।अभी तक यह स्पष्ट नहीं है कि मुक्त किए गए फ़िलिस्तीनियों को कहां भेजा जाएगा। हालांकि, जनवरी में रिहाई के दौरान कई कैदियों को ट्यूनीशिया, अल्जीरिया और तुर्की सहित अन्य देशों में निर्वासित किया गया था। विशेषज्ञों का कहना है कि जबरन निर्वासन अवैध है और यह रिहा किए गए कैदियों के नागरिक अधिकारों का उल्लंघन करता है।दोहा इंस्टीट्यूट फॉर ग्रेजुएट स्टडीज के सार्वजनिक नीति के एसोसिएट प्रोफेसर तामेर कर्मौत ने अल जज़ीरा को बताया, 'इसमें कोई संदेह नहीं कि यह अवैध है। ये फ़िलिस्तीनी नागरिक हैं, उनके पास कोई अन्य नागरिकता नहीं है। उन्हें एक छोटी जेल से बाहर निकाल कर अपनी मातृभूमि से दूर, नए देशों में भेजा जा रहा है, जहां उन्हें कड़ी पाबंदियों का सामना करना पड़ेगा। यह पूरी तरह अमानवीय है।'

कब्जे वाले पश्चिमी तट के रामल्लाह में अल जज़ीरा से बात करते हुए फ़िलिस्तीनी कैदी मुहम्मद इमरान के रिश्तेदारों ने बताया कि उन्हें यह जानकर आश्चर्य और निराशा हुई कि उनके भाई को जबरन निर्वासित किया जाएगा।रिश्तेदार राएद इमरान ने बताया कि पहले उन्हें इज़राइली खुफिया अधिकारी ने फोन करके कहा था कि मुहम्मद को रिहा किया जाएगा और पूछा कि रिहाई के बाद वह कहां रहेंगे। लेकिन सोमवार को परिवार ने जाना कि उन्हें विदेश भेजा जाएगा। मुहम्मद को दिसंबर २०२२ में गिरफ्तार किया गया था और १३ आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी।

राएद ने कहा, 'आज की खबर चौंकाने वाली थी, लेकिन हम अभी भी इंतजार कर रहे हैं। ज़रूरी यह है कि उसकी रिहाई हो, चाहे वह यहाँ हो या किसी विदेशी देश में।' निर्वासन का मतलब यह भी है कि इज़राइल द्वारा सीमाओं पर नियंत्रण के कारण परिवार विदेश जाकर भी अपने प्रियजन से नहीं मिल पाएगा। क़र्मौत के अनुसार, निर्वासन का उद्देश्य हमास और अन्य फ़िलिस्तीनी समूहों को प्रतीकात्मक जीत का दावा करने से रोकना और कैदियों को किसी भी राजनीतिक या सामाजिक गतिविधियों से दूर रखना है।उन्होंने कहा, 'निर्वासन का अर्थ है उनका राजनीतिक भविष्य समाप्त करना। जिन देशों में वे जाएंगे, वहां उन्हें अत्यधिक बाधाओं का सामना करना पड़ेगा, इसलिए वे संघर्ष से जुड़े किसी भी मोर्चे पर सक्रिय नहीं रह पाएंगे।'कर्मौत ने आगे कहा कि यह बलपूर्वक विस्थापन कैदियों के परिवारों के लिए भी सामूहिक दंड जैसा है। परिवार या तो अपने निर्वासित प्रियजनों से अलग रहेंगे या अगर इज़राइल अनुमति देगा तो उन्हें अपनी मातृभूमि छोड़कर विदेश जाना होगा।उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि यह स्थिति इज़राइल के लिए जीत है, क्योंकि रिहा किए गए इजरायली बंदी अपने देश में जीवन फिर से शुरू कर सकते हैं, जबकि फ़िलिस्तीनी कैदी निष्प्रभावी और दूरस्थ रहेंगे। यह पूरी प्रक्रिया दोहरे मापदंड और पाखंड का उदाहरण है।यह रिहाई और निर्वासन की घटना न केवल कैदियों के लिए व्यक्तिगत त्रासदी है, बल्कि यह फ़िलिस्तीनी समुदाय के लिए एक गहरी राजनीतिक और सामाजिक चुनौती भी प्रस्तुत करती है।

ट्रम्प ने मध्य पूर्व के लिए 'ऐतिहासिक सुबह' घोषित की, युद्धविराम में मदद के लिए अरब देशों का आभार व्यक्त किया

यरूशलम, (वृत्तसंस्था)
अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने सोमवार को इजरायली संसद में कहा कि गाजा युद्धविराम ने 'एक नए मध्य पूर्व की ऐतिहासिक सुबह' की शुरुआत की है। उन्होंने अपने भाषण में अरब और मुस्लिम देशों को धन्यवाद दिया, जिन्होंने युद्धविराम और बंधकों की रिहाई में योगदान दिया।

ट्रम्प ने कहा कि अब इजरायल को क्षेत्र में स्थायी शांति के लिए काम करना चाहिए। इजरायली सांसदों ने उनका संसद में उत्साहपूर्ण स्वागत किया। उन्होंने गाजा के सुरक्षित पुनर्निर्माण में सहयोग के लिए अरब और मुस्लिम देशों की सराहना की और कहा, 'अनवरत युद्ध और खतरे के वर्षों के बाद, आज आसमान शांत है, बंदूकें शांत हैं, और सूर्य एक पवित्र भूमि पर उग रहा है जो अंततः शांतिपूर्ण है। यह न केवल युद्ध का अंत है, बल्कि एक नए मध्य पूर्व की ऐतिहासिक सुबह है।'ट्रम्प ने कहा कि इजरायल ने युद्ध में 'जीत' हासिल की है और अब समय है कि इसे पूरे मध्य पूर्व के लिए शांति और समृद्धि में बदल दिया जाए। उन्होंने कहा, 'मैं अरब और मुस्लिम दुनिया के उन सभी देशों का आभारी हूं, जिन्होंने बंधकों को मुक्त कराने और हमास पर दबाव डालने में योगदान दिया। हमें असंख्य मदद मिली, और इसके लिए मैं उनका धन्यवाद करता हूं। यह इजरायल और दुनिया के लिए अविश्वसनीय जीत है।'

इजरायली संसद में ट्रम्प का भाषण एक वामपंथी सांसद को निष्कासित किए जाने के कारण थोड़ी देर के लिए बाधित हुआ। ट्रम्प ने चुटकी लेते हुए कहा कि यह 'बहुत कुशलता से' किया गया। सांसद को तुरंत बाहर निकाल दिया गया और ट्रम्प ने उस समय चुप रहकर स्थिति का अवलोकन किया।ट्रम्प को इजरायली सांसदों ने खड़े होकर तालियों से सम्मानित किया। उनके साथ विशेष दूत स्टीव विटकॉफ, दामाद जेरेड कुशनर, और बेटी इवांका भी मौजूद थीं। भाषण के दौरान ट्रम्प ने गाजा के पुनर्निर्माण में सहायता का वादा किया और फिलिस्तीनियों से 'आतंक और हिंसा के रास्ते को हमेशा के लिए त्यागने' का आग्रह किया।उन्होंने कहा, 'बेहद दर्द, मौत और कठिनाई के बाद, अब समय आ गया है कि इजरायल अपने लोगों के विकास पर ध्यान केंद्रित करे।'

इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने भी संसद में कहा कि वे इस शांति के लिए प्रतिबद्ध हैं और दो वर्षों के युद्ध का अंत हो गया है। उन्होंने ट्रम्प की मध्यस्थता की सराहना करते हुए कहा कि इससे सभी जीवित इजरायली बंधकों की वापसी संभव हुई। नेतन्याहू ने कहा, 'डोनाल्ड ट्रम्प व्हाइट हाउस में इज़राइल के अब तक के सबसे अच्छे दोस्त हैं। किसी भी अमेरिकी राष्ट्रपति ने इज़राइल के लिए इतना नहीं किया।'

नेतन्याहू ने इजरायली सैनिकों की प्रशंसा की और कहा कि देश ने हमास पर अद्भुत जीत हासिल की है। उन्होंने कहा कि अब नए शांति समझौतों की संभावनाएं खुल रही हैं। ट्रम्प ने तेल अवीव में एयरफोर्स वन फ्लाईओवर किया, जहां हजारों लोग इकट्ठा थे। यह फ्लाईओवर गाजा से पहले ७ जीवित इजरायली बंधकों की वापसी के बाद हुआ। इसके साथ ही १,९०० से अधिक फ़िलिस्तीनी कैदियों की रिहाई भी शामिल है।

युद्धविराम के पहले चरण में शामिल है:
हमास द्वारा बंधक बनाए गए शेष ४८ इजरायली बंधकों की रिहाई, इजरायल द्वारा बंधक बनाए गए सैकड़ों फ़िलिस्तीनी कैदियों की रिहाई, गाजा में मानवीय सहायता में वृद्धि, गाजा के मुख्य शहरों से इजरायली सेना की आंशिक वापसी.

ट्रम्प ने बताया कि युद्धविराम अभी भी नाजुक है और गाजा के युद्धोत्तर शासन, पुनर्निर्माण, तथा हमास के निरस्त्रीकरण पर दोनों पक्षों के बीच बातचीत चल रही है। उन्होंने कहा कि यदि इजरायल की माँगें पूरी नहीं हुईं तो सैन्य अभियान फिर से शुरू हो सकता है। गाजा का अधिकांश भाग मलबे में तब्दील हो चुका है और लगभग २० लाख निवासी अभी भी कठिन परिस्थितियों में जीवन यापन कर रहे हैं। समझौते के तहत इज़राइल ने पाँच सीमा चौकियों को फिर से खोलने पर सहमति दी, जिससे खाद्य और अन्य आपूर्ति का प्रवाह आसान होगा।

पाकिस्तान ने ४ साल बाद पलटा रुख: तालिबान शासन को 'अवैध' करार

इस्लामाबाद ,(वृत्तसंस्था)
पाकिस्तान ने अफगानिस्तान से किए गए हालिया हमलों में अपने ५८ सैनिकों की मौत के बाद तालिबान के शासन को 'अवैध और गैर-कानूनी' घोषित कर दिया है। यह कदम पाकिस्तान की अफगान नीति में बड़ा बदलाव माना जा रहा है। २०२१ में जब तालिबान ने काबुल पर कब्जा किया था, पाकिस्तान उन देशों में से एक था जिसने इसे तुरंत मान्यता दी थी और तालिबान को खुला समर्थन दिया था। लेकिन अब चार साल बाद, पाकिस्तान ने उसी तालिबान शासन को अवैध ठहरा दिया है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह फैसला नैतिक या वैचारिक कारणों से नहीं, बल्कि सुरक्षा संकट और रणनीतिक मजबूरी के कारण लिया गया है।

पाकिस्तान के विदेश विभाग ने ११-१२ अक्टूबर की रात को पाकिस्तान-अफगान सीमा पर तालिबान द्वारा किए गए हमलों को लेकर गहरी चिंता व्यक्त की। बयान में कहा गया कि इन हमलों का मकसद 'पाकिस्तान-अफगान सीमा को अस्थिर करना' और 'दो भाईचारे वाले देशों के बीच शांतिपूर्ण और सहयोगात्मक संबंधों का उल्लंघन करना' था। पाकिस्तान ने तालिबान के शासन को स्पष्ट रूप से 'अवैध और गैर-कानूनी' करार दिया और कहा कि उसने सीमा पर हमलों को प्रभावी ढंग से नाकाम किया, तथा तालिबान से जुड़े ठिकानों को भारी नुकसान पहुंचाया। रिपोर्ट्स के मुताबिक पाकिस्तान ने यह भी दावा किया कि जिन टारगेटों को निशाना बनाया गया, उनका इस्तेमाल पाकिस्तान के खिलाफ आतंकवादी हमलों की योजना बनाने के लिए किया जा रहा था। साथ ही कहा गया कि सैन्य कार्रवाई के दौरान नागरिक हानि से बचने के लिए सभी एहतियाती कदम उठाए गए, और केवल आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाया गया। पाकिस्तान ने जोर देकर कहा कि वह संवाद और कूटनीति को महत्व देता है, लेकिन अपनी भूमि और नागरिकों की सुरक्षा के लिए हर आवश्यक कदम उठाएगा। विश्लेषकों और भारतीय खुफिया सूत्रों का कहना है कि पाकिस्तान का यह कदम सुरक्षा संकट और आंतरिक दबाव के कारण है। तालिबान के हालिया सीमा हमलों और पाकिस्तान में टीटीपी की बढ़ती हिंसा ने देश की आंतरिक स्थिरता को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। २०२१ में जब तालिबान ने काबुल पर कब्जा किया था, पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी घ्ए्घ के तत्कालीन प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल फैज हमीद काबुल स्थित सेरेना होटल गए थे। उस समय उनके काबुल में चाय पीते हुए फोटो वायरल हुई थी, जिसे पाकिस्तान ने संदेश देने के लिए इस्तेमाल किया था कि अफगानिस्तान पर उसका नियंत्रण है। लेकिन अब स्थिति पूरी तरह बदल गई है। चार साल बाद, पाकिस्तान के हाथों से तालिबान का प्रभाव कम हो गया है। अब न तो हिबतुल्लाह अखुंदजादा के नेतृत्व वाला कंधारी गुट पाकिस्तान के प्रभाव में है, न ही हक्कानी नेटवर्क, जिसे कभी पाकिस्तान का सबसे भरोसेमंद रणनीतिक मोहरा माना जाता था। विशेषज्ञों का मानना है कि पाकिस्तान द्वारा तालिबान शासन को अवैध घोषित करना सत्तारूढ़ सरकार की आलोचना से ध्यान हटाने का भी एक प्रयास है। पाकिस्तान के कई मंत्री अब भी तालिबान प्रतिनिधियों के साथ बैठकें करते रहे हैं, लेकिन जनता के सामने इस नीति के उलट इशारे देना सरकार के लिए ज़रूरी हो गया है।

यह कदम पाकिस्तान के लिए रणनीतिक और सुरक्षा दोनों दृष्टियों से एक बड़ा परिवर्तन है, क्योंकि अब देश को तालिबान के नियंत्रण वाले अफगानिस्तान पर पहले जैसी पकड़ नहीं रही और उसे अपनी सीमा और नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए कठोर निर्णय लेने पड़े हैं।

झड़पें किस कारण से शुरू हुईं?

तालिबान रक्षा मंत्रालय ने शुक्रवार को बताया कि गुरुवार को काबुल में दो विस्फोट हुए तथा एक अन्य विस्फोट सीमावर्ती प्रांत पकतिका के एक नागरिक बाजार में हुआ।

तालिबान सरकार ने पाकिस्तान पर अफ़ग़ानिस्तान के 'संप्रभु क्षेत्र' का उल्लंघन करने का आरोप लगाया। इस्लामाबाद ने विस्फोटों से सीधे इनकार नहीं किया, लेकिन तालिबान से पाकिस्तान तालिबान की गतिविधियों पर अंकुश लगाने को कहा।

एक पाकिस्तानी सुरक्षा अधिकारी ने रॉयटर्स समाचार एजेंसी को बताया कि हवाई हमले किए गए और काबुल में उनका लक्ष्य टीटीपी का नेता था, जो एक वाहन में यात्रा कर रहा था।

अल जजीरा स्वतंत्र रूप से यह पुष्टि नहीं कर सका कि नेता नूर वली महसूद बच गया है या नहीं।पाकिस्तान और तालिबान, जो कभी साझा सुरक्षा हितों के लिए सहयोगी थे, इस्लामाबाद के इस दावे को लेकर उनके बीच दुश्मनी बढ़ती जा रही है कि तालिबान टीटीपी को शरण दे रहा है, जिस पर पाकिस्तान के अंदर वर्षों से हमले करने का आरोप है।

इस्लामाबाद स्थित थिंक टैंक सेंटर फॉर रिसर्च एंड सिक्योरिटी स्टडीज (सीआरएसएस) के अनुसार, इस वर्ष की पहली तीन तिमाहियों में कम से कम २,४१४ मौतें दर्ज की गई हैं।

पिछले महीने जारी अपनी नवीनतम रिपोर्ट में, सीआरएसएस ने कहा कि अगर मौजूदा रुझान जारी रहा, तो २०२५ पाकिस्तान के लिए सबसे घातक वर्षों में से एक हो सकता है। पिछले साल, हमलों में कम से कम २,५४६ लोग मारे गए थे।

अप्रैल २०२२ में पूर्व पाकिस्तानी प्रधानमंत्री इमरान खान के अपदस्थ होने के बाद से हमलों में वृद्धि हुई है। खान की सरकार ने टीटीपी को युद्धविराम के लिए सहमत कराने के प्रयासों में तालिबान को शामिल किया था । हालाँकि खान के कार्यकाल के दौरान युद्धविराम टूट गया, लेकिन हमलों की आवृत्ति कम रही।

संबंध खराब हो गए हैं क्योंकि इस्लामाबाद ने अफगानिस्तान के अंदर हवाई हमलों का उपयोग बढ़ा दिया है ताकि उन ठिकानों को निशाना बनाया जा सके जिनके बारे में उसका कहना है कि उनका इस्तेमाल टीटीपी लड़ाके करते हैं।

विश्लेषकों का कहना है कि पाकिस्तानी सैनिकों के खिलाफ टीटीपी के हमलों में हाल ही में हुई वृद्धि, घातक झड़पों का मुख्य कारण थी।

पेशावर स्थित राजनीतिक एवं सुरक्षा विश्लेषक महमूद जान बाबर ने कहा कि आत्मघाती बम विस्फोटों सहित टीटीपी के हमलों ने पाकिस्तान को अफगानिस्तान में हमला करने के लिए मजबूर किया।

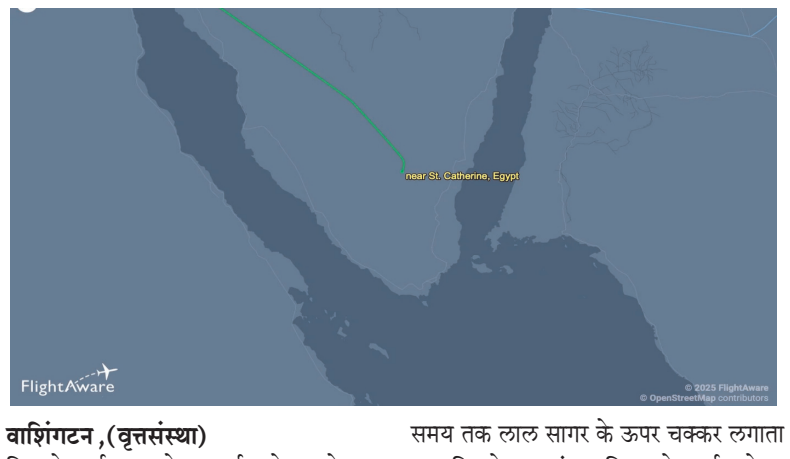

नेतन्याहू के गाज़ा शिखर सम्मेलन में शामिल होने की खबरों के बीच एर्दोगन के विमान की शर्म अल-शेख में असामान्य उड़ान, लाल सागर के ऊपर मंडराया

वाशिंगटन ,(वृत्तसंस्था)
मिस्र के शर्म अल-शेख हवाई अड्डे पर सोमवार को एक असामान्य दृश्य देखने को मिला, जब तुर्की के राष्ट्रपति रेसेप तैय्यप एर्दोगन का विशेष विमान रनवे को पार करते हुए लाल सागर के ऊपर मंडराने लगा। यह घटना ऐसे समय में हुई जब मीडिया में यह खबरें चल रही थीं कि इज़राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू भी गाज़ा शिखर सम्मेलन में भाग लेने वाले हैं।

राज्य संचालित अनादोलु समाचार एजेंसी के अनुसार, राष्ट्रपति एर्दोगन का टीआरके१ बोइंग ७४७ जेट विमान शर्म अल-शेख के लिए निर्धारित लैंडिंग मार्ग को पार कर गया और कुछ समय तक लाल सागर के ऊपर चक्कर लगाता रहा, जिसके बाद अंततः विमान ने हवाई अड्डे पर सुरक्षित लैंडिंग की। हवाई अड्डे पर एर्दोगन का स्वागत मिस्र सरकार के निचले स्तर के मंत्रियों द्वारा किया गया।

कई फ्लाइट ट्रैकिंग वेबसाइटों ने १०:३४ GMT पर एर्दोगन के विमान से सिग्नल प्राप्त करना बंद कर दिया था, जब वह अब भी हवाई अड्डे के रास्ते में था। १४:०० GMT तक भी कुछ वेबसाइटों पर विमान को हवा में दिखाया जा रहा था, जबकि वास्तव में वह कई घंटे पहले उतर चुका था। इससे विमान की उड़ान को लेकर सोशल मीडिया पर अटकलों का दौर शुरू हो गया।इसी बीच, सोमवार को कई अंतरराष्ट्रीय मीडिया रिपोर्टों में यह बताया गया कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के अनुरोध पर नेतन्याहू गाज़ा शिखर सम्मेलन में भाग लेने वाले हैं। लेकिन कुछ ही समय बाद, नेतन्याहू के कार्यालय ने स्पष्ट किया कि प्रधानमंत्री इस शिखर सम्मेलन में शामिल नहीं होंगे, क्योंकि यहूदी पर्व शेमिनी अत्ज़ेरेट-सिमचत तोराह सोमवार रात से शुरू हो रहा है।इज़राइल के परंपरागत धार्मिक नियमों के अनुसार, यहूदी नेता सब्बाथ या धार्मिक त्योहारों के दौरान यात्रा नहीं करते, सिवाय असाधारण परिस्थितियों के। नेतन्याहू कार्यालय ने ट्रम्प के निमंत्रण के लिए उनका आभार व्यक्त किया और 'शक्ति के माध्यम से शांति' के उनके प्रयासों की सराहना की। शिखर सम्मेलन में नेतन्याहू की संभावित उपस्थिति को लेकर प्रारंभ में कई देशों में असमंजस था। सम्मेलन में भाग लेने वाले कुछ राष्ट्राध्यक्ष औपचारिक रूप से इज़राइल को मान्यता नहीं देते। इनमें कतर के अमीर शेख तमीम बिन हमद अल थानी, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ, इराक के प्रधानमंत्री मोहम्मद शिया अल-सुदानी, इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांटो, और कुवैत व ओमान के प्रतिनिधि शामिल हैं।

इन छह देशों में से किसी ने भी अब तक इज़राइल को आधिकारिक मान्यता नहीं दी है। इसी वजह से नेतन्याहू के सम्मेलन में शामिल होने की खब़र फैलते ही कई प्रतिनिधिमंडलों ने अपनी भागीदारी पर पुनर्विचार किया, और बाद में तब जाकर स्थिति सामान्य हुई जब नेतन्याहू के कार्यालय ने पुष्टि की कि वे यात्रा नहीं करेंगे।

सीएनएन तुर्क की रिपोर्ट के अनुसार, नेतन्याहू की भागीदारी की अफवाहों के बीच तुर्की और अन्य कुछ देशों के प्रतिनिधिमंडलों ने अस्थायी रूप से सम्मेलन से दूरी बना ली थी। बाद में उन्होंने अपना रुख तब बदला जब नेतन्याहू की अनुपस्थिति की आधिकारिक घोषणा की गई।इस बीच, तुर्की के एक वरिष्ठ अधिकारी ने सीएनएन को बताया कि अंकारा ने सीधे अमेरिकी अधिकारियों से संपर्क किया और उनसे आग्रह किया कि नेतन्याहू की भागीदारी के फैसले को रद्द करवाया जाए।यह शिखर सम्मेलन उस समय आयोजित किया जा रहा है जब इज़राइल और हमास के बीच युद्धविराम समझौते के पहले चरण पर सहमति बनी है, जिसमें 'युद्ध समाप्त करने' और कैदियों की अदला-बदली की रूपरेखा तय की गई है।

अमेरिका द्वारा मध्यस्थता की गई इस तथाकथित 'शांति योजना' का यह केवल पहला चरण है। आने वाले चरणों में गाज़ा से इज़राइली सेना की पूर्ण वापसी, हमास का निरस्त्रीकरण, और क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय शांति सैनिकों की तैनाती जैसे बिंदुओं पर बातचीत होने की उम्मीद है। हालांकि, अब तक हमास, इज़राइल या मध्यस्थ देशों ने इन वार्ताओं की कोई स्पष्ट समयसीमा नहीं बताई है।याद रहे, यह युद्ध ७ अक्टूबर २०२३ को तब शुरू हुआ था जब हमास ने इज़राइल पर हमला किया, जिसे उसने 'दशकों के कब्ज़े, अल-अक्सा मस्जिद के अपमान, गाज़ा की १६ वर्षीय नाकाबंदी और फ़िलिस्तीनी कैदियों के साथ दुर्व्यवहार' का जवाब बताया था।

उसके बाद से इज़राइल ने गाज़ा पर भारी सैन्य अभियान चलाया, जिसमें अब तक २.४५ लाख से अधिक फ़िलिस्तीनी मारे गए या घायल हुए, जबकि गाज़ा का अधिकांश बुनियादी ढाँचा — घर, स्कूल, अस्पताल, मस्जिदें, चर्च और सार्वजनिक स्थान — पूरी तरह तबाह हो चुके हैं। ताज़ा रिपोर्टों, यहाँ तक कि कुछ इज़राइली सैन्य खुफिया आंकड़ों के अनुसार भी, मई २०२५ तक युद्ध में मारे गए लोगों में से ८० प्रतिशत से अधिक नागरिक थे।

गाज़ा शिखर सम्मेलन ऐसे समय में हो रहा है जब पूरी दुनिया इस संघर्ष को समाप्त करने और मध्य पूर्व में एक स्थायी समाधान की तलाश में है। मगर नेतन्याहू की संभावित भागीदारी की अफवाहों ने इस प्रयास को एक बार फिर राजनीतिक तनाव से भर दिया है।

सपकाल बोले - गोडसे ने ठंडे दिमाग से गांधी जी की हत्या की, फडणवीस भी ठंडे दिमाग से झगड़ा लगा रहे हैं

मुंबई -

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष हर्षवर्धन सपकाल के हालिया बयान से महाराष्ट्र की राजनीति में एक नया विवाद भड़क गया है। सपकाल ने रविवार को पत्रकारों से बातचीत में राज्य के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस पर निशाना साधते हुए कहा है कि जिस प्रकार नाथूराम गोडसे ने ठंडे दिमाग से गांधी जी की हत्या की थी, ठीक उसी तरह आज फडणवीस भी ठंडे दिमाग से काम करते हैं, और आरक्षण को लेकर दो समाजों को भिड़ाने का काम कर रहे हैं। हालांकि सपकाल ने कहा कि वह गोडसे और फडणवीस की तुलना नहीं कर रहे हैं। भाजपा ने सपकाल के बयान पर पलटवार किया है। सपकाल ने क्या कहा? प्रदेश

कांग्रेस अध्यक्ष सपकाल ने अपने बयान में कहा कि नाथूराम गोडसे ने ठंडे दिमाग से गांधी जी की हत्या की थी। उसकी योजना ठोस थी। जैसे उसने गांधी की हत्या करने से पहले उनके पैर छुए थे और उसके बाद गोलियों से निशाना बनाया था। आज वही तरीका अपनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि फडणवीस भी राजनीति में छुपा हथियार उठा रहे हैं।

फडणवीस ठंडे दिमाग से आरक्षण को लेकर दो समाज के बीच झगड़ा लगा रहे हैं। सपकाल ने कहा कि मैं दोनों के कार्य की तुलना नहीं कर रहा हूं, लेकिन दोनों की मोडस ऑपरेंडी एक जैसी है।

भाजपा नेता और विधायक अतुल भातखलकर ने सपकाल के बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि हर्षवर्धन हमेशा से ही मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस पर आपत्तिजनक बयान देते आए हैं। भातखलकर ने कहा कि इससे पहले भी हर्षवर्धन ने फडणवीस की तुलना औरंगजेब से की थी।

लेकिन मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि राज्य की जिस जनता ने कांग्रेस के नेताओं की डिपॉजिट जब्त कर ली थी, अब उसके नेता चुनी सरकार के मुखिया पर इस तरह की बयानबाजी कर अपनी राजनीतिक रोटी सेक रहे हैं। लेकिन हम उनके बयान को ज्यादा महत्व नहीं देते हैं। भातखलकर ने कहा कि जैसे विधानसभा चुनाव में राज्य की जनता ने कांग्रेस को उसकी औकात दिखाई, उसी तरह से आगामी स्थानीय चुनावों में भी उनका सूपड़ा साफ होने वाला है।

२० साल बाद मां के साथ मातोश्री पहुंचे राज ठाकरे
उद्धव से बीते चार महीनों में हुई छठी मुलाकात

मुंबई-

महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के अध्यक्ष राज ठाकरे अपनी मां के साथ रविवार को शिवसेना (उद्धव) पक्ष प्रमुख उद्धव ठाकरे के निवास 'मातोश्री' पहुंचे। खबर है कि ठाकरे परिवार की यह मुलाकात स्नेह भोजन पर हुई। इस मुलाकात को खास इसलिए माना जा रहा है क्योंकि २० वर्ष बाद राज ठाकरे अपनी मां को लेकर मातोश्री पहुंचे थे। पिछले चार महीने में उद्धव ठाकरे से उनकी यह छठी मुलाकात है। राज का अपनी मां के साथ मातोश्री आना ठाकरे बंधुओं के रिश्तों में एक नए अध्याय के रूप में देखा जा रहा है। भावनात्मक मुलाकात, राजनीतिक संदेश राज और उद्धव दोनों बालासाहेब ठाकरे के वारिस माने जाते थे, लेकिन वर्षों पहले शिवसेना (अविभाजित) से अलग होकर राज ठाकरे ने अपनी पार्टी बना ली थी। तब से दोनों भाइयों के रिश्तों में तल्खी बनी रही। लेकिन हाल के महीनों में रिश्तों में जो गर्मजोशी देखी जा रही है, वह केवल पारिवारिक नहीं बल्कि राजनीतिक दृष्टि से भी मायने रखती है। जानकारी के अनुसार रविवार की यह मुलाकात करीब तीन घंटे तक चली। जिसमें राज और उद्धव के अलावा दोनों के परिवार के सभी सदस्य मौजूद रहे। चर्चा तो यह भी है कि बैठक के दौरान बीएमसी चुनाव और आगामी स्थानीय निकाय चुनावों को लेकर रणनीति पर भी चर्चा हुई।यह पहली बार नहीं है कि दोनों नेताओं ने मुलाकात की हो। पिछले चार महीन में यह छठी बार है जब राज और उद्धव एक-दूसरे से मिले हैं। पहले की मुलाकातें भी कभी मातोश्री में तो कभी राज के घर या अन्य जगहों पर हुई थीं। लेकिन इस बार मां के साथ जाना एक अलग संदेश हो सकता है। राज के करीबी सूत्रों का कहना है कि यह सिर्फ एक पारिवारिक भेंट नहीं थी, बल्कि ठाकरे परिवार के एक होने की ओर एक और कदम है। उधर, शिवसेना (उद्धव) के सूत्रों ने कहा कि मुलाकात सौहार्दपूर्ण माहौल में हुई और भविष्य में और भी नजदीकियां देखने को मिल सकती हैं। खबर है कि उद्धव ठाकरे मनसे के छत्रपति शिवाजी महाराज पार्क में आयोजित होनेवाले दीपोत्सव कार्यक्रम में शामिल हो सकते हैं। राजनीतिक हलकों में अटकलें तेज राज और उद्धव की लगातार हो रही मुलाकातों से राजनीतिक गलियारों में ये अटकलें तेज हो गई हैं कि आगामी चुनाव में मनसे और शिवसेना (उद्धव) के बीच कोई गठबंधन हो सकता है।

विधायक संग्राम जगताप को राकांपा अजित गुट ने भेजा कारण बताओ नोटिस, सुप्रिया सुले बोलीं पार्टी से निकालो

मुंबई:

राकांपा (अजित) विधायक संग्राम जगताप के दिवाली के मौके पर विवादित बयान देने के चलते उनकी मुश्किलें बढ़ती नजर आ रही हैं। राकांपा (अजित) प्रदेशाध्यक्ष सुनील तटकरे ने जगताप के बयान को गैर जिम्मेदाराना बयान मानते हुए कारण बताओ नोटिस जारी किया है। तटकरे ने जगताप से उनके बयान पर सफाई मांगी है। दरअसल जगताप ने सोलापुर में एक कार्यक्रम में दीपावली की खरीदारी केवल हिंदू दुकानदारों से ही करनी चाहिए और इस त्यौहार का लाभ केवल हिंदुओं को ही मिलना चाहिए, इस तरह का बयान दिया था। जिस पर पार्टी अध्यक्ष अजित पवार ने भी नाराजगी जताई थी। राकांपा (शरद) कार्याध्यक्ष सुप्रिया सुले ने जगताप को पार्टी से निकालने की मांग की है। सुनील तटकरे ने जगताप को जो नोटिस भेजा है, उनके बयान पर स्पष्टीकरण मांगते हुए कहा है कि हमारी पार्टी की नीति और विचारधारा के खिलाफ कोई भी विधायक या पार्टी का जिम्मेदार व्यक्ति इस प्रकार के बयान नहीं दे सकता। हमने जगताप को धर्म को लेकर की जा रही बयानबाजी से बचने को कहा लेकिन उन्होंने पार्टी के दिशा निर्देशों का उल्लंघन किया है। तटकरे ने यह भी कहा कि हमारी पार्टी धर्मनिरपेक्ष पार्टी है, और इसमें ऐसी किसी भी विचारधारा को कोई जगह नहीं है जिससे दो धर्मों के बीच दीवार खड़ी कर सके। उन्होंने कहा कि पार्टी के ज्यादातर नेताओं का मानना है कि ऐसे बयान समाज में विभाजन पैदा करते हैं और पार्टी की छवि को नुकसान पहुंचाते हैं।

जगताप के बयान पर राकांपा (शरद) प्रदेशाध्यक्ष सुप्रिया सुले ने कहा कि उन्होंने भी जगताप का बयान सुना है। उनका बयान नफरत भरा बयान है। सुले ने कहा कि अजित गुट के विधायक संग्राम जगताप के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जानी चाहिए। उन्होंने कहा है जगताप को केवल नोटिस देकर काम नहीं चलेगा, उन्हें पार्टी से बाहर निकाला जाना चाहिए। वहीं भाजपा नेता गोपीचंद पडलकर ने कहा कि कोई विधायक हिंदुत्व का मुद्दा उठा रहा है ये कोई सामान्य बात नहीं है। इसको लेकर किसी को कोई एतराज नहीं होना चाहिए। क्या कहा था जगताप ने? दरअसल जगताप ने एक कार्यक्रम में कहा था कि दीपावली के समय हर नागरिक को हिंदू दुकानदारों से ही खरीदारी करनी चाहिए, ताकि हिंदू समुदाय को आर्थिक रूप से मजबूत किया जा सके। उन्होंने कहा था कि वर्तमान में हिंदू मंदिरों और समुदायों पर हमले मस्जिद से हो रहे हैं, जिसका उन्हें दुख है। इसी बयान के बाद जगताप पार्टी के शीर्ष नेतृत्व और विपक्ष के निशाने पर आ गए थे।

बीएमसी चुनाव के लिए एकनाथ शिंदे ने तैयार की रणनीति, उम्मीदवारों से लेकर सीट बंटवारे तक का प्लान तैयार

मुंबई-

महानगर पालिका (बीएमसी) चुनाव को लेकर राज्य की सत्ता में मौजूद महायुति के दलों भाजपा, शिवसेना (शिंदे) और राकांपा (अजित) ने अब रणनीतिक स्तर पर तैयारी शुरू कर दी है। सूत्रों के मुताबिक महायुति के घटक दलों के बीच सीट बंटवारे पर टकराव टालने की पूरी योजना तैयार हो रही है, ताकि मुंबई में विपक्ष खासकर शिवसेना (उद्धव) और कांग्रेस को सीधी टक्कर दी जा सके। शिंदे गुट के एक नेता ने 'दैनिक भास्कर' से बातचीत में कहा कि पार्टी प्रमुख एकनाथ शिंदे ने पार्टी की अंदरूनी बैठकों में इस बात का कई बार जिक्र किया है कि जैसे लोकसभा और विधानसभा चुनाव में सीट बंटवारा आखिर तक चला था, ऐसा बीएमसी चुनाव में

देखने को नहीं मिलेगा। साथ ही सीटों के बंटवारे पर हम कोई अड़ियल रुख नहीं अपनाएंगे। क्या है शिंदे गुट की रणनीति? शिंदे गुट के एक नेता के मुताबिक हमारी पार्टी की पूरी कोशिश है कि बीएमसी की सत्ता पर दोबारा भगवा झंडा लहराया जाए। लेकिन इसके लिए गठबंधन के सहयोगियों के साथ सीट बंटवारे में सौहार्द बनाए रखना होगा। इस नेता ने यह भी कहा कि पिछले दो चुनावों में महायुति में सीट बंटवारे के दौरान अनबन की खबरें सार्वजनिक हुई थीं, जिसका चुनाव में असर पड़ा था। चुनाव की घोषणा से पहले ही सीट शेयरिंग पर स्थिति लगभग स्पष्ट हो जाएगी। खबर है कि इस समय शिंदे गुट में करीब ५५ नगरसेवक उद्धव ठाकरे का साथ छोड़कर शामिल हो गए हैं। ऐसे में यह लगभग तय है कि पिछले बीएमसी के चुनाव में जिस क्षेत्र की सीट जिस पार्टी यानि भाजपा, शिवसेना (अविभाजित) और राकांपा (अविभाजित) के पास थी, इस चुनाव में भी वही सीट उसी पार्टी के पास होगी। हालांकि इक्का दुक्का सीटों पर अदला-बदली संभव है। शिंदे गुट में पूर्व नगरसेवकों की संख्या १०० तक पहुंची शिवसेना (शिंदे) में पूर्व नगरसेवकों की इनकमिंग अभी भी जारी है। शिंदे गुट के एक नेता के अनुसार अभी तक उनकी पार्टी में करीब १०० पूर्व नगरसेवक शामिल हो चुके हैं।

सूचना तकनीकी मंत्री आशीष शेलार के जनता दरबार में हंगामा, सावंत बोले - चुनाव में जनता सबक सिखाएगी

मुंबई-

महाराष्ट्र सरकार में सूचना तकनीकी एवं सांस्कृतिक मंत्री आशीष शेलार के जनता दरबार में शनिवार को उस वक्त अफरातफरी मच गई जब बड़ी संख्या में नागरिक अपनी समस्याएं लेकर पहुंचे और समाधान न होने पर जोरदार हंगामा किया। दरअसल जनता दरबार का कार्यक्रम शिवसेना (शिंदे) के विधायक मुरजी पटेल के विधानसभा क्षेत्र अंधेरी पूर्व में था। बड़ी संख्या में लोगों के पहुंचने के चलते लोगों की समस्याएं नहीं सुनी गईं, जिसके बाद लोगों ने हंगामा करते हुए आरोप लगाया कि जनता दरबार सिर्फ दिखावा है, मंत्री यहां केवल फोटो खिंचवाने आते हैं, काम कोई नहीं करता। इसी हंगामे का एक वीडियो कांग्रेस नेता सचिन सावंत ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर साझा करते हुए सवाल उठाए हैं। दरअसल जनता दरबार शिंदे गुट के विधायक मुरजी पटेल के विधानसभा क्षेत्र अंधेरी पूर्व में लगाया गया था। इस दरबार में शिकायतें सुनने के लिए मुंबई मनपा और मुरजी के दफ्तर से टोकन स्थानीय लोगों को बांटे गए थे। लेकिन लोगों की संख्या ज्यादा होने से अफरा तफरी का माहौल हो गया। इसी दौरान कुछ लोगों ने जनता दरबार के बाहर ही हंगामा मचाना शुरू कर दिया। स्थानीय लोगों ने आरोप लगाया कि बार-बार आवेदन देने और शिकायत करने के बावजूद क्षेत्र में पानी की समस्या, गटर

ओवरफ्लो, गलियों की मरम्मत और झोपड़पट्टी पुनर्विकास जैसे मुद्दों पर कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। नाराज लोगों ने नारेबाजी करते हुए कहा कि जनता दरबार सिर्फ दिखावा है। हंगामे के बाद मंत्री शेलार ने कहा कि उन्होंने नागरिकों की शिकायतों को गंभीरता से लिया है और संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में संवाद ही समाधान का रास्ता है, न कि हंगामा। इस बीच मनपा के एक अधिकारी ने कहा कि कार्यक्रम के लिए २५० लोगों को टोकन दिया गया था, लेकिन तय संख्या से ज्यादा लोगों के पहुंचने से सभी की समस्याएं नहीं सुनी जा सकीं।कांग्रेस नेता सचिन सावंत ने इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर साझा करते हुए कहा कि जब जनता की समस्याएं अनसुनी की जाती हैं, तो यही होता है। मंत्रीजी को जनता दरबार की नहीं, जमीनी हकीकत की चिंता करनी चाहिए।

महाराष्ट्र: बहन के मोबाइल से चैट, फोटो-वीडियो भेजे, हनी ट्रैप में फंसे विधायक, आरोपी अरेस्ट

मुंबई-

महाराष्ट्र के विधायक शिवाजी पाटिल को हनी ट्रैप में फंसाने की कोशिश की गई है. आरोपी ने बहन के मोबाइल से अश्लील चैट की, फोटो और वीडियो भेजकर विधायक को परेशान किया. इसके बाद १० लाख रुपए की मांग की और पैसे न देने पर राजनीतिक छवि खराब करने की धमकी दी. इस मामले में कार्रवाई करते हुए ठाणे पुलिस ने कोल्हापुर से आरोपी को गिरफ्तार किया. उसे १५ अक्टूबर तक पुलिस हिरासत में भेजा गया है.

शिवाजी पाटिल कोल्हापुर जिले के चांदगढ़ निर्वाचन क्षेत्र से विधायक हैं. आरोपी युवक का नाम मोहन जोतिबा पवार है और वो २६ साल का है. उसे चांदगढ़ तालुका के मंडेदुर्ग गांव से गिरफ्तार किया गया. पुलिस ने बताया कि आरोपी ने ये काम करने के लिए अपनी बहन के मोबाइल का उपयोग किया. उसी से विधायक पाटिल को अश्लील चैट, फोटो और वीडियो भेजकर परेशान किया. बाद में १० लाख रुपए मांगे.

मामला सामने आने के बाद ठाणे और कोल्हापुर पुलिस ने संयुक्त जांच की और आरोपी को गिरफ्तार किया. शुरुआती जांच में पता चला है कि आरोपी मोहन पवार एक किसान का बेटा है और बीएससी का छात्र है. नौकरी नहीं मिलने के कारण वो मानसिक रूप

से परेशान हो गया और इसके बाद ऐसा कदम उठाया.गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने उसे कोर्ट में पेश किया. कोर्ट ने उसे १५ अक्तूबर तक पुलिस हिरासत में भेज दिया.

पुलिस इस मामले के पीछे के असली मकसद की जांच कर रही है. आरोपी ने अपनी जिस बहन के फोन का इस्तेमाल किया वो विवाहित है. इस मामले में उस लड़की का क्या रोल है, पुलिस ये भी जांच कर रही है.

२०२४ के विधानसभा चुनाव में शिवाजी शट्टुपा पाटिल ने निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव जीता. उन्हें सबसे ज्यादा ८३,६५३ वोट मिले. उन्होंने एनसीपी के राजेश नरसिंहराव पाटिल को हराया. एनसीपी उम्मीदवार को ५९,४७५ वोट मिले थे.

MVA में कांग्रेस पर राज ठाकरे का बदला रुख? संजय राउत ने किया बड़ा दावा

मुंबई-

शिवसेना (उद्धव गुट) के नेता संजय राउत ने राज ठाकरे को लेकर बड़ा बयान दिया है. उन्होंने दावा किया है कि एमएनएस अध्यक्ष राज ठाकरे खुद चाहते हैं कि कांग्रेस महाविकास अघाड़ी में रहे. इससे पहले राज ठाकरे के उद्धव के साथ गठबंधन को लेकर एमवीए में कांग्रेस के साथ होने का राज ठाकर ने विरोध किया था. पहले राज ठाकरे कांग्रेस के चलते एमवीए में शामिल होने से मना कर रहे थे लेकिन अब संजय राउत ने राज की कांग्रेस के एमवीए में होने को लेकर बदली भूमिका पर बड़ा बयान दिया है.

संजय राउत ने कहा, खुद राज ठाकरे की इच्छा है कि कांग्रेस को एमवीए में होना चाहिए. यह उनकी भूमिका है निर्णय नहीं. मैं फिर से बोलता हूं क्योंकि हर किसी की महाराष्ट्र में अपनी भूमिका है. जैसे बालासाहेब, उद्धव ठाकरे, शरद पवार, राज ठाकरे की अहमियत और भूमिका है. उसी तरह कांग्रेस भी महाराष्ट्र की अहम पार्टी है. इसलिए राज्य के चुनाव आयुक्त

से कल की मीटिंग वाले प्रतिनिधिमंडल में राज ठाकरे भी शामिल होंगे.

उधर, महाराष्ट्र में आगामी चुनावों को लेकर पार्टी की रणनीतिक दिशा पर चर्चा के लिए मनसे अध्यक्ष राज ठाकरे ने एक बैठक बुलाई थी. इस बैठक में मनसे प्रवक्ताओं, नेताओं और पदाधिकारियों ने भाग लिया. इस मौके पर राज ठाकरे ने नेताओं को आने वाले दिनों में पार्टी की कार्यशैली पर मार्गदर्शन दिया. बैठक के बाद मनसे नेता संदीप देशपांडे और बाला नांदगांवकर ने मीडिया से बातचीत की.

संदीप देशपांडे ने कांग्रेस को लेकर बड़ा बयान दिया. उन्होंने कहा, हमने कांग्रेस को कोई प्रस्ताव नहीं भेजा है. इसलिए उनकी बातों का कोई मतलब नहीं है. राज ठाकरे हमारी पार्टी का रुख तय करते हैं. राज ठाकरे कांग्रेस के साथ रुख के बारे में फ़ैसला लेंगे और सही समय पर सूचित करेंगे. उन्होंने छठ पूजा को लेकर भी बड़ा बयान दिया. देशपांडे ने कहा किमनसे छठ पूजा के खिलाफ नहीं है लेकिन अगर इसके पीछे राजनीतिक ताकत दिखाने की कोशिश की गई तो उसका विरोध किया जाएगा, यह राज ठाकरे का रुख है.

अग्रलेख

मणिपुर की सियासी ठहराव: दिल्ली की चुप्पी और जनता की बेचैनी

दिल्ली में बैठे भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के शीर्ष नेतृत्व की खामोशी मणिपुर की राजनीतिक अनिश्चितता को और गहरा रही है। राज्य के करीब २६ भाजपा विधायक, जिनमें पूर्व मुख्यमंत्री एन. बीरेन सिंह भी शामिल हैं, पिछले पाँच दिनों से दिल्ली में डेरा डाले हुए हैं। वे गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा से मुलाकात कर राज्य में जल्द सरकार गठन की मांग करना चाहते हैं। लेकिन पाँच दिन बीतने के बावजूद किसी भी वरिष्ठ नेता ने उनसे मिलने की ज़रूरत नहीं समझी।

विधायकों की यह बेचैनी समझी जा सकती है। मणिपुर फरवरी २०२४ से राष्ट्रपति शासन के अधीन है, जिसे दो बार बढ़ाया जा चुका है और अब फरवरी २०२६ तक लागू रहना तय है। इतने लंबे समय से लोकतांत्रिक सरकार का अभाव न सिर्फ राज्य की जनता को असहाय बना रहा है बल्कि भाजपा की राजनीतिक साख को भी नुकसान पहुँचा रहा है। दिल्ली पहुंचे विधायकों की मुलाकात अब तक केवल भाजपा के उत्तरपूर्व प्रभारी संबित पात्रा से हुई है। बीरेन सिंह और अन्य विधायकों ने उनसे कहा कि मणिपुर के सभी भाजपा विधायक एकजुट हैं और किसी तरह का गुटबाज़ी नहीं है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यदि अब भी सरकार गठन में देरी होती है, तो यह भाजपा के लिए नुकसानदेह होगा, क्योंकि जनता अब अधीर हो रही है।

पात्रा ने अपने जवाब में कहा कि सरकार गठन से पहले सभी समुदायों–मीतई, कुकी और नागा–के बीच सहमति जरूरी है। लेकिन सवाल यह है कि आखिर यह सहमति कब बनेगी? दो साल से ज़्यादा समय हो गया है, राज्य अशांति से बाहर आने की कोशिश कर रहा है, फिर भी केंद्र सरकार कोई ठोस निर्णय नहीं ले पा रही है।

केंद्रीय नेतृत्व का ध्यान फिलहाल बिहार चुनावों पर है, और मणिपुर भाजपा विधायकों को यह महसूस हो रहा है कि उनके राज्य की चिंता फिलहाल प्राथमिकता में नहीं है। कुछ विधायक तो यहाँ तक कह रहे हैं कि यदि दिल्ली में उनकी कोई सुनवाई नहीं हुई, तो वे दो-तीन दिनों में वापस लौट जाएंगे। यह स्थिति भाजपा के लिए बेहद शर्मनाक हो सकती है–क्योंकि यही विधायक जनता से वादा कर आए थे कि वे दिल्ली जाकर सरकार बहाल करवाएंगे।

मणिपुर में राष्ट्रपति शासन लागू होने का कारण २०२३ के जातीय संघर्ष थे, जिन्होंने राज्य को हिंसा, अविश्वास और भय के गर्त में धकेल दिया। हालांकि अब हिंसा में काफी कमी आई है और कानून-व्यवस्था कुछ हद तक सुधरी है, लेकिन केंद्र अब भी राष्ट्रपति शासन हटाने से हिचक रहा है। सुरक्षा एजेंसियों का मानना है कि राज्य में स्थायी शांति के लिए कुछ और समय चाहिए। यह दलील अपनी जगह सही हो सकती है, लेकिन लोकतंत्र का यह सिद्धांत भी उतना ही महत्वपूर्ण है कि जनता को चुनी हुई सरकार मिले। यदि भाजपा खुद को स्थिरता और शासन की पार्टी बताती है, तो मणिपुर में लंबी प्रशासनिक खामोशी उस दावे पर सवाल खड़े करती है।

राजनीतिक समीकरणों की बात करें तो मणिपुर विधानसभा में भाजपा के पास अब भी बहुमत है। ५९ विधायकों के सदन में पार्टी के पास ३७ सीटें हैं, जिसमें सात विधायक कुकी-जो समुदाय से हैं। बाकी दलों–एनपीपी, एनपीएफ और कांग्रेस–की उपस्थिति सीमित है। इसका मतलब है कि यदि भाजपा चाहे तो सरकार गठन में कोई तकनीकी बाधा नहीं है। असल अड़चन राजनीतिक इच्छाशक्ति की है। मणिपुर भाजपा में अंदरूनी खींचतान नई नहीं है। बीरेन सिंह के समर्थक और विरोधी दोनों गुट मौजूद हैं, जबकि कुकी विधायकों ने अपने आप को किसी भी चर्चा से अलग रखा है। लेकिन यदि सभी विधायक वास्तव में एकजुट हैं, जैसा कि वे दिल्ली में दावा कर रहे हैं, तो केंद्र को अब विलंब नहीं करना चाहिए।

यह समाचार पत्र मालक, प्रकाशक **सज्जाद हुसेन अलताफ हुसेन**, इन्होने मुद्रक - औरंगज़ेब हुसेन सज्जाद हुसेन, मुद्रण स्थल- **हुसेनी प्रिटींग प्रेस,** हुसेनी कॉम्प्लेक्स, वाशिम बायपास, अकोला ता.जि. अकोला (महाराष्ट्र) यहा छापकर ऑफीस : **दैनिक सुफ्फा,** जनता भाजी बाज़ार, अकोला जि. अकोला यहां से प्रकाशित किया. **संपादक : सज्जाद हुसेन अलताफ हुसेन** प्रकाशित लेख और खबरों से संपादक सहमत है ऐसा नही. (पी.आर.बी.ॲक्ट के अनुसार संपादक उत्तरदायी होंगे) सभी प्रकरण अकोला न्यायालय के अंतर्गत रहेंगे.

गाज़ा हत्याकांड पर पश्चिमी देशों की प्रतिक्रिया – नैतिकता का दोहरा मापदंड

अरबों और मुसलमानों के प्रति पश्चिमी देशों का पक्षपात एक बार फिर सामने आया जब ७ अक्टूबर, २०२३ को हुए हमास के इज़राइल पर हमले की दूसरी बरसी मनाई गई।

अमेरिका में राष्ट्रपति से लेकर स्थानीय नेताओं तक, सभी ने उस हमले में मारे गए १,२०० इज़राइली लोगों के प्रति गहरी संवेदना जताई। लेकिन पिछले दो वर्षों में इज़राइली हमलों में मारे गए लगभग ७०,००० फ़िलिस्तीनियों के लिए न तो कोई शोक व्यक्त किया गया और न ही कोई संवेदना दिखाई गई। यही वह बात है जो इस पूरे घटनाक्रम को नैतिक रूप से पाखंडी बनाती है।

७ अक्टूबर को हुए हमले की निंदा करना बिल्कुल सही है — वह एक जघन्य अपराध था। लेकिन जब उसी सांस में गाज़ा में हो रही फ़िलिस्तीनियों की लगातार हत्याओं पर चुप्पी साध ली जाती है, तो यह मानवता के मूल सिद्धांतों के साथ विश्वासघात है। पश्चिमी सरकारें और मीडिया इज़राइलियों की मौतों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाते हैं, जबकि फ़िलिस्तीनियों की पीड़ा को या तो नज़रअंदाज़ किया जाता है या फिर आँकड़ों तक सीमित कर दिया जाता है। ऐसा लगता है कि फ़िलिस्तीनी जीवन की कोई कीमत नहीं।

दोहरे मानदंड की राजनीति

पिछले दो वर्षों में, पश्चिमी मीडिया और राजनेताओं ने हमास द्वारा पकड़े गए इज़राइली बंधकों पर लगातार चर्चा की। बताया गया कि २५१ में से ४८ अब भी रिहा नहीं हुए हैं, जिनमें से करीब २० के जीवित होने की उम्मीद है।

लेकिन उसी समय, किसी ने यह नहीं बताया कि ११,००० से अधिक फ़िलिस्तीनी आज भी इज़राइली जेलों में बिना मुकदमे और बिना आरोप के बंद हैं। उनकी कोई तस्वीर, कोई कहानी, कोई नाम किसी अखबार में नहीं छपता।

यह मानो एक नस्लीय हिसाब-किताब बन गया है — १,२०० इज़राइलियों की मौतों को बार-बार गिना जाता है, जबकि ६८,००० फ़िलिस्तीनियों की मौतें सिर्फ़ एक 'संख्या' बनकर रह जाती हैं।

मीडिया का असमान व्यवहार

पिछले हफ्ते, लगभग हर प्रमुख अमेरिकी मीडिया संस्था ने हमास की कैद में बचे कुछ इज़राइलियों की कहानियां छापीं , उनके नाम, परिवार, दर्द और उम्मीदें बताईं। लेकिन उन्हीं मीडिया संस्थानों ने गाज़ा में मारे गए या कैद फ़िलिस्तीनियों पर कोई मानवीय कहानी नहीं दिखाई। उनका ज़िक्र सिर्फ़ एक ठंडे आँकड़े के रूप में होता है — 'हज़ारों की मौत।' इससे यह भ्रम पैदा होता है कि एक इज़राइली का जीवन सौ फ़िलिस्तीनियों से अधिक महत्वपूर्ण है। यह सोच अपने आप में गहराई तक भरी नस्लीय असमानता को दर्शाती है।

हिंद रजब की दर्दनाक कहानी

गाज़ा की एक पाँच साल की बच्ची हिंद रजब की हत्या इस नैतिक पाखंड का सबसे दर्दनाक उदाहरण है।

जनवरी २०२४ में, हिंद और उसका परिवार इज़राइली बमबारी से बचने की कोशिश कर रहे थे। उनका वाहन जब एक सुनसान सड़क पर पहुँचा, तो एक इज़राइली टैंक ने उस पर फायरिंग कर दी। हिंद के माता-पिता और परिवार के पाँच सदस्य मौके पर ही मारे गए। हिंद और उसका एक चचेरा भाई गंभीर रूप से घायल थे, लेकिन जिंदा थे। उन्होंने रेड क्रीसेंट के रेस्क्यू कर्मियों से संपर्क किया। जब निहत्थे डॉक्टर और पैरामेडिक्स उन्हें बचाने पहुँचे, तो इज़राइली सैनिकों ने उन सबको मार डाला। बाद में सभी के शव जलती कार के पास पाए गए। इज़राइल ने शुरुआत में किसी भी जिम्मेदारी से इनकार किया। लेकिन वॉशिंगटन पोस्ट की जांच में पाया गया कि हिंद के परिवार की कार पर ३५५ गोलियां चलाई गई थीं। इस घटना पर बनी फिल्म 'द वॉयस ऑफ हिंद रजब' (लेखक-निर्देशक: कौथर बेन हानिया) ने कई अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार जीते, लेकिन यह फिल्म अमेरिका और इज़राइल में दिखाने की अनुमति नहीं दी गई। फिल्म में हिंद की असली ऑडियो रिकॉर्डिंग शामिल है — जिसमें वह रेड क्रीसेंट से मदद की गुहार लगाती रही, जब तक कि उसकी हत्या नहीं कर दी गई।

नैतिकता की हार

७ अक्टूबर २०२३ से अब तक गाज़ा में जो कुछ हुआ है, वह सिर्फ़ एक युद्ध या राजनीतिक संघर्ष नहीं है — यह मानवता की हत्या है।

इज़राइली बमबारी में बच्चों, महिलाओं और निर्दोष नागरिकों की जो मौतें हुई हैं, उन्हें पश्चिमी मीडिया और नेताओं ने लगभग सामान्य बना दिया है। हर नई बमबारी के बाद अमेरिका और उसके सहयोगी इज़राइल के 'आत्मरक्षा के अधिकार' की बात करते हैं, लेकिन किसी ने कभी फ़िलिस्तीनियों के 'जीवित रहने के अधिकार' की बात नहीं की। यह वही पश्चिम है जो मानवाधिकारों, न्याय और समानता की बातें करता है — लेकिन जब बात अरबों और मुसलमानों की आती है, तो वही मूल्य ग़ायब हो जाते हैं। आज गाज़ा में जो हो रहा है, वह न केवल ७०,००० फ़िलिस्तीनियों की हत्या है, बल्कि यह पश्चिमी नैतिकता और मानवता का भी नरसंहार है।

अरबों दिलों कि चाहत और धड़कन है नामें मुहम्मद (सल्ल.)

साजिद खान, धनपुरी

दुनिया की जनसंख्या कि एक चौथाई आबादी है हजरत मुहम्मद सल्ल. कि अनुयायी

इस दुनिया का रचयिता स्वामी अल्लाह ने अपने पवित्र ग्रंथ कुरआन में अध्याय अल इनशिराह ९४५ में स्पष्ट शब्दों में अपने प्रिय संदेशवाहक इस्लाम के अंतिम दूत हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को संबोधित करते हुए कहा है कि वरा फाना लका जिकरक जिसके मायने हैं कि ऐ पैगंबर (मुहम्मद सल्ल.) हमने आपका जिक्र बुलंद कर दिया, जरा सोचिए जिसके जिक्र को दुनिया का खालिक व मालिक बुलंद कर दे उसे कौन घटा सकता है इसलिए दुनिया में सबसे ज्यादा रखें जाने वाला नाम मुहम्मद है। दुनिया में तकरीबन १५ करोड लोगों का नाम मुहम्मद है। दुनिया में हर आठवें आदमी का नाम मोहम्मद है। इंग्लैंड से लेकर इंडिया तक सबसे ज्यादा रखा जाने वाला नाम मुहम्मद है। इस समय पूरी दुनिया की आबादी तकरीबन ८ अरब है जिसमें २५.६ प्रतिशत मुसलमान है जिसमें तकरीबन २०० करोड़ यानी दो अरब से अधिक मुसलमान पैगंबरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुयायी दित्त्दीं हैं और सब हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान रखते हैं और आपसे प्यार करते हैं और सभी आपसे आई लव यू कहते हैं वह अपनी जिंदगी आप पर निसार करते हैं। इंग्लैंड के ऑफिस फार नेशनल स्टेटिक्स २०२३ के सर्वे के अनुसार इंग्लैंड में पहले नंबर पर लोगों का नाम मुहम्मद है। बेबी सेंटर के सर्वे के अनुसार २०२२ में भारतवर्ष में पहले नंबर पर नाम मुहम्मद है।अमेरिका के वैज्ञानिक माइकल एच. हार्ट ने अपनी वर्ल्ड फेमस किताब 'द हंड्रेड' में बताया है कि जब से दुनिया बनी है तब से आज तक सबसे प्रभावशाली और पहला व्यक्तित्व और पहले नंबर पर नाम मुहम्मद है। टाइम मैगजीन के १५ जुलाई १९७४ के अंक में अमेरिकी मनोविश्लेषक जूल्स मासरमैन लिखते हैं कि एक नेता को तीन कार्य करने होते हैं १. अपने अनुयायियों की भलाई का ध्यान रखना। २. एक ऐसा सामाजिक संगठन प्रदान करना जिसमें लोग अपने को सुरक्षित महसूस करें। ३. उन्हें विश्वास का एक समूह प्रदान करना। पैगंबरें इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहू अलैह वसल्लम के बारे में अमेरिकी मनोविश्लेषण जूल्स मासरमैन के अनुसार शायद सभी समय के सबसे महान नेता पैगंबरें मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम थे जिन्होंने इन तीनों कार्यों को मिलाकर निभाया। (हु वर हिस्ट्री द ग्रेट लीडर्स स्पेशल सेक्शन इन टाइम मैगजीन) पांच मर्तबा पूरी दुनिया में अजान होती है और पांच बार नमाज होती है। पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण हर तरफ अजान और नमाज हो रही है और इस अजान और नमाज में बार-बार हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम आता है और उन पर दारूदों सलाम पढ़ा जाता है। यह हैं हजरत मुहम्मद सल्ल .नाम की बरकत, यह हैं मुहम्मद नाम की अजमत, और कुछ ऐसे लोग भी हैं जिन्हें आई लव यू मुहम्मद कहने, लिखने से तकलीफ हो रही है कितनी संकीर्ण सोच के लोग हैं, और किसी शायर ने क्या सच्ची बात कही है ' एक नाम ए मुहम्मद है जो बढ़कर घटा नहीं। बाकी हर एक उरूज (ऊंचाई) पर पिन्हा जवाल (पतन) है।। यह हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से प्यार और मुहब्बत का जज्बा जो मेरे मां बाप ने मुझे बचपन में पैदा किया था जो आज तक बरकरार है। मेरे मां-बाप दोनों दुनिया से रुखसत हो गए हैं। आप सभी पढ़ने वाले भाइयों बहनों से खास गुजारिश है कि आप सभी दुआ फरमाए की अल्लाह तआला मेरी प्यारी मोहसिन मेहरबान अम्मी हज्जन जुबेदा बी रहमतुल्लाहि अलैहा और अब्बू जनाब बाबू खान साहब की बख्शीस और मगफिरत फरमाए और उनके दरजात को बुलंद फरमाए आमीन या रब्बुल आलमीन।

इस नाते पाक के साथ अपनी बात पूरी करता हूं अर्ज है -

नबी के गुलामों में हो मेरा नाम।
वहां जाके कह देना मेरा सलाम।।
तमन्ना है देखूं दयार ए नबी।
मुझे बंदगी का मिले ये इनआम।।
नबीं के वसूलों पे चलते हुए।
गुजर जाए ये जिंदगानी तमाम।।
हर सम्त छाया था अम्ने सुकूं।
प्यारे नबी का था ऐसा निजाम।।
तमन्ना है जब मौत आए मेरी।
लबों पे हो मेरे दरूदों सलाम।।
मेरी सिर्फ इतनी सी है आरजू।
हो 'साजिद' का तेरे मदीना मुकाम।।

कुछ बातें जिनसे अल्लाह सख़्त नाराज़ होता है

- औलाद को गाली देना खुसूसन बेटी को।
- दिल में बुग़्ज़ रखना।
- मेहमान को देखकर मुँह बनाना।
- अज़ान के वक़्त काम में मसरूफ़ रहना।
- माँ बाप की अक़्ल को कोसना।
- नमाज़ के बाद दुआ न माँगना।
- खड़े होकर पानी पीना।
- बातें जो रोज़ मर्रा ज़िन्दगी में बहुत फ़ायदेमन्द हैं
- अगर ख़ुशी चाहते हो तो वक्त पर नमाज़ अदा करो।
- अगर चेहरे को पुर रौनक़ बनाना चाहते हो तो तहज्जुद पढ़ो।
- अगर सुकून चाहते हो तो क़ुरआन की तिलावत करो।
- अगर सेहत चाहते हो तो रोज़ा रखो।
- अगर मुसीबतों का हल चाहते हो तो इस्तिग़फ़ार करो।
- अगर बरकत चाहते हो तो दुरूद पढ़ो।
- अगर मुश्किलात ख़त्म करना चाहते हो तो पढ़ो वलाहउला वला कुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अलीउलअज़ीम।
- अगर ग़मों से निजात चाहते हो तो ढदुआ माँगोल।
- अगर बग़ैर थकावट के नेकियाँ कमाना चाहते हो तो इस मैसेज को आगे भेजो और समझो यह तुम्हारे और तुम्हारे वाल्दैन के लिये सदक़ा-ऐ-जरिया है।

अल्लाह और उसके रसूल की ना फ़रमानी गुमराही लाती है!

दोस्तों भाईयों अल्लाह और उसके रसूल (स.अ.) की ना फ़रमानी गुमराही लाती है इसके मुताल्लिक़ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त एक आयत मे बयान फ़रमाता है। कि किसी मोमिन मर्द और मोमिन औरत के लिए ये जायज़ नहीं के जब अल्लाह और उसके रसूल कोई बात का फ़ैसला कर दें, तो उनमे वो किसी किस्म की अपनी राय रखें उसके फ़ैसले में अगर जिसने ऐसा किया कि अल्लाह और उसके रसूल का फ़ैसला आने के बाद अपनी राय रखी वो खुली गुमराही मे जा फँसा ष्ठ डसूरह अल अहज़ाब ३ ३: आयात- ३ ६.तो इस आयत मे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने वजाहत फ़रमा दी कि। अल्लाह और उसके रसूल की बात को छोड़ना, सुन्नत को तर्क करना जायज़ नही है.. और जो ऐसा करे वो खुली गुमराही मे जा फँसा..' रसूल'अल्लाह (स. अ.) जामिया तिरमिजी की रिवायत में फरमाते है कि अपने मोमिन भाईयों को सलाम किया करो'- **आगे जारी**

रोज़ी कमाने का ग़लत तरीक़ा, ग़लत साधन, ग़लत रास्ता न अपनाओ!

पिछले अंक से...

सन्तान के लिए माता-पिता का श्रेष्ठतम उपहार (तोहफ़ा, उर्ग़) है उन्हें अच्छी शिक्षा-दीक्षा देना, उच्च शिष्टाचार सिखाना।तुममें सबसे अच्छा इन्सान वह है जो अपनी औरतों के साथ अच्छे से अच्छा व्यवहार करे।पत्नी के साथ दया व करुणा से पेश आओ तो अच्छा जीवन बीतेगा। अल्लाह की अवज्ञा से बचो। रोज़ी कमाने का ग़लत तरीक़ा, ग़लत साधन, ग़लत रास्ता न अपनाओ, क्योंकि कोई व्यक्ति उस वक्त तक मर नहीं सकता जब तक (उसके भाग्य में लिखी) पूरी रोज़ी उसको मिल न जाए। हां, उसके मिलने में कुछ देरी या कठिनाई हो सकती है। (तब धैर्य रखो, बुरे तरीके़ मत अपनाओ) अल्लाह से डरते हुए, उसकी नाफ़रमानी से बचते हुए सही, जायज़, हलाल तरीके इख़्तियार करना और हराम रोज़ी के क़रीब भी मत जाना।

वस्त्रहीन (नंगे) होकर मत नहाओ। अल्लाह हया वाला है और अल्लाह के (अदृश्य) फ़रिश्ते भी (जो हर समय तुम्हारे आसपास रहते हैं) हया करते हैं। अत्याचारी, क्रूर और ज़ालिम शासक के सामने हक़ (सच्ची, खरी, न्यायनिष्ठ) बात कहना (सच्चाई की आवाज़ उठाना) सबसे बड़ा जिहाद है। धन हो तो ज़रूरतमन्दों को क़र्ज दो। वापसी के लिए इतनी मोहलत (समय) दो कि कर्जदार व्यक्ति उसे आसानी से लौटा सके। किसी वास्तविक व अवश्यंभावी मजबूरी से, समय पर न लौटा सके तो उस पर सख़्ती तथा उसका अपमान मत करो, उसे और समय दो। क़र्ज (ऋण) पर ब्याज न लो (ब्याज इस्लाम में हराम है)।सामर्थ्य हो जाए, आर्थिक स्थिति अनुकूल हो जाए फिर भी क़र्ज़ वापस लौटाया न जाए तो यह महापाप है (जिसका दंड परलोक में नरक की यातना व प्रकोप के रूप में भुगतना पड़ेगा)।

ईश्वर चाहे तो इन्सान के गुनाह माफ़ कर दे। लेकिन उस व्यक्ति को माफ़ नहीं करेगा, चाहे वह शहीद (ईश मार्ग में जान भी दे देने वाला) ही क्यों न हो जो क़र्ज़ वापस लौटाने का सामर्थ्य होते हुए भी क़र्ज़दार होकर मरा।

जो व्यक्ति क़र्ज़ वापस किए बिना (इस कारण कि वह इसका सामर्थ्य नहीं रखता था) मर गया तो उसकी अदायगी की ज़िम्मेदारी इस्लामी कल्याणकारी राज्य (उसके शासक) पर है।

क़र्ज़ देकर एक व्यक्ति किसी ज़रूरतमंद आदमी को चोरी, ब्याज और भीख मांगने से बचा लेता है।

मुसलमानों में मुफ़लिस (दरिद्र) वास्तव में वह है जो दुनिया से जाने के बाद (मरणोपरांत) इस अवस्था में, परलोक में ईश्वर की अदालत में पहुंचा कि उसके पास नमाज़, रोज़ा, हज आदि उपासनाओं के सवाब (पुण्य) का ढेर था। लेकिन साथ ही वह सांसारिक जीवन में किसी पर लांछन लगाकर, किसी का माल अवैध रूप से खाकर किसी को अनुचित मारपीट कर, किसी का चरित्रहनन करके, किसी की हत्या करके आया था। फिर अल्लाह उसकी एक-एक नेकी (पुण्य कार्य का सवाब) प्रभावित लोगों में बांटता जाएगा, यहां तक उसके पास कुछ सवाब बचा न रह गया, और इन्साफ़ अभी भी पूरा न हुआ तो प्रभावित लोगों के गुनाह उस पर डाले जाएंगे। यहां तक कि बिल्कुल ख़ाली-हाथ (दरिद्र) होकर नरक (जहन्नम) में डाल दिया जाएगा।

अल्लाह फ़रमाता है कि बीमार की सेवा करो, भूखे को खाना खिलाओ, वस्त्रहीन को वस्त्र दो, प्यासे को पानी पिलाओ। ऐसा नहीं करोगे तो मानो मेरा हाल न पूछा, जबकि मानों मैं स्वयं बीमार था; मानो मुझे कपड़ा नहीं पहनाया, मानो मैं वस्त्रहीन था, मानो मुझे खाना-पानी नहीं दिया जैसे कि स्वयं मैं भूखा-प्यासा था।

किसी परायी स्त्री को (व्यर्थ, अनावश्यक रूप से) मत देखो, सिवाय इसके कि अनचाहे नज़र पड़ जाए। नज़र हटा लो। पहली निगाह तो तुम्हारी अपनी थी; इसके बाद की हर निगाह शैतान की निगाह होगी। (अर्थात् शैतान उन बाद वाली निगाहों के ज़रिए बड़े-बड़े नैतिक व चारित्रिक दोष, बड़ी-बड़ी बुराइयां उत्पन्न कर देगा।)

वह औरत (स्वर्ग में जाना तो दूर रहा) स्वर्ग की खुशबू भी नहीं पा सकती जो लिबास पहनकर भी नंगी रहती है (अर्थात् बहुत चुस्त, पारदर्शी, तंग या कम व अपर्याप्त लिबास पहनकर, देह प्रदर्शन करती और समाज में नैतिक मूल्यों के हनन, ह्रास, विघटन तथा अनाचार का साधन व माध्यम बनती है)। दो पराए (ना-महरम) स्त्री-पुरुष जब एकांत में होते हैं तो सिर्फ़ वही दो नहीं होते बल्कि उनके बीच एक तीसरा भी अवश्य होता है और वह है ''शैतान''। (अर्थात् शैतान के द्वारा दोनों के बीच अनैतिक संबंध स्थापित होने की शंका व संभावना बहुत होती है।)

मांगने के लिए हाथ मत फैलाओ, यह चेहरे को यशहीन कर देता (और आत्म-सम्मान के लिए घातक होता) है। मेहनत-मशक्क़त करो और परिश्रम से रोज़ी कमाओ। नीचे वाला (भीख लेने वाला) हाथ, ऊपर वाले (भीख देने वाले) हाथ से तुच्छ, हीन होता है। **आगे जारी**

बच्चों को बनाएं अच्छा गेस्ट

बच्चों को बाकी अनुशासन सिखाने के साथ ही अच्छा मेहमान बनने के गुण भी सिखाएं ताकि कभी किसी दूसरे के घर में रहने पर उन्हें असुविधा और आपको उनके व्यवहार के लिए शर्मिंदा न होना पड़े. बच्चों को अच्छा गेस्ट बनाने के लिए कौन-से रूल्स सिखाने चाहिए? बता रही हैं डॉ. सुषमा श्रीराव.

छुट्टियों में किसी रिश्तेदार के घर जाने पर शायद कई बार आपको अपने बच्चे के व्यवहार की वजह से शर्मिंदा होना पड़ा होगा या फिर गर्मी की छुट्टियों में उसे अकेले नानी/मामी या दादी के पास भेजने पर आपको इस बात का डर सताता होगा कि पता नहीं वो वहां कैसे रहेगा?

▸ अपने घर में बच्चा अक्सर सोकर देर से उठता है, मगर हो सकता है, वो जहां जा रहा है वहां ऐसा न हो. नानी के घर पर बाकी बच्चे शायद सुबह जल्दी उठ जाते हों, इसलिए अपने बच्चे को भी सुबह जल्दी उठने की आदत डालें.

▸ बच्चे को उठने के बाद अपनी चादर तह करने और बिस्तर ठीक करने की आदत लगाएं. चाहे बच्चा छोटा ही क्यों ना हो. ऐसा करने पर वो जहां जाएगा वहां उसकी तारीफ़ तो होगी ही, साथ ही लोग आपकी परवरिश की भी सराहना करेंगे.

▸ कई बच्चे, ख़ासकर जो सुबह स्कूल जाते हैं वो अक्सर बिना नहाए स्कूल चले जाते हैं. यदि आपका बच्चा भी ऐसा करता है, तो उसकी आदत बदलिए और सुबह ही नहाने की आदत लगाएं. इससे वो तरोताज़ा महसूस करेगा.

▸ आप हाउसवाइफ हों या वर्किंग वुमन, इस बात से कोई फर्क़ नहीं पड़ता, बच्चे की उम्र व क्षमता के अनुसार उसे थोड़ा-बहुत घर का काम करने के लिए कहें, जैसे एक्वागार्ड से पानी की बोतल भरना, डिनर टेबल लगाना, खाने के बाद अपने बर्तन उठाकर सिंक में डालना आदि. इस तरह के छोटे-छोटे काम बच्चों को आत्मनिर्भर व आत्मविश?वासी बनाते हैं.

सब तरह का खाना खाने की आदत डालें

खाने के मामले में बच्चे बहुत नखरे करते हैं, अतः छोटी उम्र से ही उनकी खाने से संबंधित आदत सुधारने की कोशिश करें.

खाने की टेबल पर बच्चों के नखरे किसी भी मां के लिए नई बात नहीं है. बच्चे अक्सर खाने के मामले में बहुत चूज़ी होते हैं, ये अच्छा नहीं है, वो नहीं खाना, इसका कलर कैसा है? ऐसे तमाम बहाने पैरेंट्स के लिए सिरदर्द से कम नहीं होते. यदि आपने बच्चे को हर तरह की सब्ज़ियां और खाना खाने की आदत डाली है, तो आप बधाई की पात्र हैं, लेकिन ऐसा नहीं है, तो बच्चे को समझाएं कि बाहर किसी के घर जाने पर यदि उनकी पसंद का खाना या सब्ज़ी न हो, तो वहां ज़िद करने की बजाय सामने वाले से शिष्टता से कहें कि वो चीज़ उसकी प्लेट में कम डालें, क्योंकि उसे वो पसंद नहीं है. उसका ऐसा व्यवहार सामने वाले पर भी अच्छा प्रभाव डालेगा.

▸ बच्चे को घर में ही डाइनिंग टेबल मैनर्स सिखाएं और उनका पालन करवाएं. इससे बाहर जाने पर समस्या नहीं होगी.

▸ कई बार घर पर मां के सामने खाने में नखरे करने वाले बच्चे दोस्तों/पड़ोसियों के घर पर उनकी देखादेखी में ऐसी चीज़ें भी बड़े चाव से खाने लगते हैं, जो उन्हें पसंद नहीं. अतः छोटी उम्र से ही बच्चों को समाज में घुलना-मिलना सिखाएं.

▸ चीज़ों को जगह पर रखना सिखाएं

चाहे खिलौने हों, कपड़े, क़िताबें या कोई भी सामान बच्चे इस्तेमाल के बाद यहां-वहां फेंक देते हैं. दूसरों के घर जाने पर भी वो ऐसा न करें इसके लिए उन्हें घर पर ही सभी सामान सही जगह पर रखना सिखाएं.

▸ बच्चे अक्सर खेलने के बाद खिलौने वैसे ही इधर-उधर बिखरे हुए छोड़ देते है, जिससे घर बेतरतीब लगता है. अतः उन्हें प्यार से सिखाएं कि खेलने के बाद सारे खिलौने जमा करके अपनी जगह पर वापस रख दें. खिलौनों के अलावा अन्य चीज़ें, जैसे- कपड़े, क़िताबें आदि के बारे में ऐसा ही करें. शुरू से ही ऐसा करने पर बच्चे को अपनी चीज़ें सहेजने की आदत हो जाएगी. बाहर जाने पर भी वो अपनी चीज़ें संभालकर रखेगा.

▸ बच्चे को एक बात अवश्य सिखाएं कि वो दूसरों की चीज़ें उनसे पूछे बिना ना ले. यदि वो दोस्तों के घर जाता है तो उनसे पूछे, 'क्या मैं तुम्हारे खिलौनों से खेल सकता हूं?' या 'क्या मैं यह नॉवेल पढ़ने के लिए ले सकती हूं?' ऐसा करने पर बच्चे की तारीफ़ होगी और लोग आपके दिए संस्कारों के भी कायल हो जाएंगे.

▸ बच्चों को सिखाएं अच्छी बातें

▸ बच्चे का व्यक्तित्व एक रात में नहीं बदल सकता, इसके लिए आपको रोज़ मेहनत करनी पड़ेगी. पैरेंट्स को ख़ुद भी वैसा ही व्यवहार करना पड़ेगा, जैसा वो बच्चे से चाहते हैं. सबसे पहले बच्चे को 'थैंक यू' और 'प्लीज़' का महत्व समझाएं.

▸ बड़ों से मिलने पर 'नमस्ते' करना सिखाएं. साथ ही अन्य मैनर्स भी सिखाएं.

▸ बच्चे को महसूस होना चाहिए कि अपनी उपस्थिति दर्शाने के लिए, एक अच्छी मुस्कुराहट या 'हैलो' कहना ही काफ़ी होता है. यदि घर पर बच्चा इस तरह का व्यवहार करेगा, तो निश?चित ही बाहर भी वह ऐसा ही करेगा.

▸ मुश्किल में दें बच्चे का साथ

बच्चे को सब कुछ सिखाने के साथ ही आपको उसे समझना भी होगा. अतः उसकी भावनाओं को समझें और उसे ये एहसास दिलाएं कि आप हमेशा उसके साथ हैं.

▸ आजकल बच्चों के सेक्सुअल एब्यूज़ की घटनाएं अक्सर सुनने में आती हैं. अतः तसल्ली कर लें कि जिस जगह आप बच्चे को अकेला भेज रही हैं वो पूरी तरह सुरक्षित हो. बच्चे की क्षमता और स्मार्टनेस पर विश?वास रखें कि अगर कोई समस्या आती है तो वह हैंडल कर लेगा. साथ ही उसे ये भी विश?वास दिलाएं कि यदि वो हैंडल नहीं कर पाता है तो उसके पैरेंट्स सब संभाल लेंगे. अपनी परेशानी वो आपके साथ बांट सकता है.

▸ आजकल स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत बच्चों को विदेश जाने का भी मौक़ा मिल रहा है, जिससे उन्हें बहुत कुछ सीखने को

कैसे करें ठंड से बचाव

सर्दियो का मौसम वैसे तो बडा ही मजेदार होता है, लेकिन यह अपने साथ बहुत सी स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी लाता है, जिन से बचने के लिए सबसे जरूरी होता है खुद को सर्दी के प्रभाव से बचाए रखना। सर्दी वकाई स्किन के लिए कठोर होती है। ठंडा तापमान, सूखा मौसम तथा सर्द हवाएं आपकी स्किन की नमी को कम करती हैं, जिस का नतीजा होता है खुरदरी तथा खुजली वाली स्किन। आपको कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए।

खानपान

सर्दियो में फलों व सब्जियों की भरमार होती है। इसके सेवन से आपके शदीर को प्रचुर मात्रा में विटामिन ए, बी व सी मिलते हैं। अंदर से स्वस्थ रहेंगे तो बाहर से भी सुन्दर दिखेंगे।

साबुन का प्रयोग

साबुन को बाहरी अंगों पर जरूरत के अनुसार ही लगाएं। साबुन आप की स्किन से प्राकृतिक तेल को चुरा लेता है। साबुन के जरूरत से ज्यादा यूज की कोई आवश्यकता नहीं होती।

आतंरिक नमी

तरल पेयों का खुब सेवन करें। कम से कम ६ गिलास पानी रोज पीएं। इससे स्किन में नमी बनी रहेगी। साथ ही, आप जरूरी फैटी ऐसिड लें। इससे आपकी स्किन स्वस्थ बनी रहेगी।

दिल का दौरा

सर्दियो में व्यायाम कर के आप दिल के दौरे के खतरे को कम कर सकते हैं, इसलिए नियमित व्यायाम करें। अगर आपको उपरोक्त कोई भी लक्षण दिखे तो उसे बिलकुल भी नजरअंदाज ना करें। तुरंत अपने डॉक्टर से सलाह लें। सर्दि्यों में स्वस्थ दिल के लिए हमें निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए। अपने शरीर के मास इंडैक्स को बनाएं रखें। इसके लिए नियमित व्यायाम करें। कोलैस्ट्रौल की जांच कराएं। स्वस्थ आहार का चयन करें व कम वसा वाला खाना खाएं।

ज्यादा वजन वाले सजग रहें, क्योंकि अतिरिक्त वजन आपके दिल तथा धमनियों पर दबाव डालता है।

अपने रक्त के दबाव को नियंत्रित करें। अपने खाने में नमक की मात्रा को कम करें।

मूंग की दाल खाने के फायदे

मूंग की दाल द्विदल धान्य है और समस्त दलहनों में मूंग अपने विशेष गुणों के कारण अच्छी मानी जाती है। रोगियों के लिए मूंग बहुत श्रेष्ठ बताई जाती है। मूंग काले, हरे, पीले, सफेद और लाल अनेक तरह के होते हैं। काली मूंग पचने में हल्की होती हैं। मूंग की खिचड़ी, दाल आदि बनाई जाती है। मूंग की दाल से पापड़, बड़ियां आदि भी बनती हैं। मूंग को उबालकर तरकारी भी बनाई जाती है तथा मूंग के पौष्टिक लड्डू भी बनाए जाते हैं और सदि्यों के मौसम में उनका सेवन किया जाता है।

गुण:- मूंग की अपेक्षा मूंग का पसावन बिल्कुल ही वायुकारक नहीं होता। मूंग का पसावन-वात, पित्त और कफ का शमन करता है। मूंग मल को रोकने वाली और आंखों के लिए हितकारी व बुखार को दूर करने वाली है।

ज्वर (बुखार):- मूंग को छिलके समेत खाना चाहिए। ज्वर (बुखार) होने पर मूंग की दाल में सूखे आंवले को डालकर पकाएं। इसे रोजाना दिन मे २ बार खाने से ज्वर ठीक होगा और दस्त साफ आएगा।

कब्ज:- चावल और मूंग की खिचड़ी खाने से कब्ज दूर होता है। मूंग की दाल और चावल की खिचड़ी बनाएं। फिर इसमें नमक मिलाकर और घी डालकर खायें। इससे कब्ज दूर होकर दस्त साफ आता है। **पसीने के अधिक आने पर:**

मूंग को सेंककर पीस लें। फिर इसमें पानी डालकर अच्छी तरह से मिलाकर लेप की तरह शरीर पर मालिश करें। इससे पसीना ज्यादा आना बन्द हो जाता है।

आग से जलने पर:- मूंग को पानी के साथ पीसकर शरीर के जले हुए भाग पर लगाने से आराम आता है।

शक्ति वर्धक (शक्ति बढ़ाने वाला) :- मूंग के लड्डू खाने से शक्ति बढ़ती है। मूंग को सेंककर आटा बनाएं। आटे के बराबर घी लेकर, कड़ाही में धीमी आंख पर रखें और कलछी से हिलाते जाए। जब आटा कुछ लालिमा पकड़ लें तब, बीच-बीच में उसके ऊपर दूध छिड़कते जाएं। ऐसा करते-करते जब दाने पड़ जाएं तब कड़ाही को चूल्हे से नीचे उतारकर उसमें शर्करा, बादाम, पिश्ते, इलायजी, लौंग और कालीमिर्च का चूर्ण डालकर लड्डू बना लें। मूंग के ये लड्डू शीतल, वीर्यवर्धक और वातशामक है।

आंत्रिक ज्वर (टायफाइड):- रोगी को मूंग की दाल बनाकर देने से आराम आता है। लेकिन दाल के साथ घी और मसालों का प्रयोग बिल्कुल भी न करें।

पेशाब का बार-बार आना:- रात को लोहे के बर्तन में पानी डालकर उसमें ५० ग्राम मसूर की दाल भिगो दें। रोजाना सुबह के समय इस दाल का पानी घूंट-घूंट करके पीने से पेशाब का बार-बार आना कम हो जाता है।

बुखार:- बनमूंग के पंचांग (पत्ती, तना, फल, फूल और जड़) का काढ़ा ४० मिलीलीटर रोजाना २ से ३ बार लेने से बुखार उतर जाता है।

बनमूंग के पत्तों का काढ़ा शरीर को पुष्ट करता है और नींद और जलन को कम करता है।

आंखों का फूला:- मूंग की दाल (धुली हुई और छिलका उतारी हुई) और शंख नाभि के बराबर बारीक चूर्ण को शहद के साथ मिलाकर आंखों में काजल की तरह लगाने से आंखों का फूला दूर होता है।

पित्त ज्वर:- मूंग और मुलहठी का जूस बनाकर पीने से पित्त बुखार ठीक हो जाता है।

लंबे समय तक एक जगह बैठे रहने से डायबिटीज का खतरा

आज के दौर में जहां हम हर तरह की सुविधाओं से घिरें हुए हैं ऐसे में बहुत ही काम हम खुद करते है. ऑनलाइन ऑर्डर के इस दौर में अब खाने का सामान भी सीधा लोगों के दरवाजे पर पहुंचने लगा है. ऐसे में व्यस्कों में और लंबे समय तक बैठे रहने की प्रवृत्ति बढ़ने की आशंका है.

आप भोजन, रीडिंग, ड्राइविंग, फोन पर बात करते वक्त, कंप्यूटर व मोबाइल पर काम करते हुए या फिर टीवी देखते हुए, हर समय बैठे रहते हैं. ये सब चीजें आपकी दिनचर्या में बड़े स्तर पर शामिल हैं. लंबे समय तक एक जगह बैठे रहने से डायबिटीज का खतरा बढ़ता है. ताजा यूसीएलए शोध बताता है कि बिना ब्रेक के लंबे समय तक बैठे रहना घातक साबित हो सकता है, खासतौर पर अधिक उम्र वाले व्यस्कों के लिए. वर्तमान में अधिक उम्र के व्यस्क जितने समय सक्रिय रहते हैं, उसका ५६ से ८६ प्रतिशत समय बैठे रहते हैं.शोध के मुताबिक बैठने की बजाए खड़े होकर काम करने से डायबिटीज का खतरा कम होता है. रिसर्च में पता चला है कि चाहे आप नियमित व्यायाम भी करते हों, मगर ज्यादा देर तक बैठकर काम करना डायबिटीज के खतरे को बढ़ाता है. ६५ साल से ज्यादा उम्र वाले लोगों को डायबिटीज से बचने के लिए काम के दौरान नियमित तौर पर खड़े होना चाहिए.जब आप घंटों तक एक जगह बैठे रहते हैं तो आपकी पैरों की मांसपेशियां निष्क्रिय रहती हैं. ये निष्क्रियता वजन बढ़ने और डायबिटीज की सबसे बड़ी वजह है. ये समस्याएं आगे जाकर हृदय व रक्तचाप संबंधी रोगों को जन्म देती है. शोध में दो तरह के लोगों पर अध्ययन किया या. एक वह जो ८-८ घंटे एक जगह पर बैठे रहते हैं और दूसरे वह जो आधे आधे घंटे में खड़े होते रहते हैं, इधर-उधर चलते-फिरते रहते हैं. विशेषणात्मक अध्ययन से यह देखा गया

किचन में लगातार खड़े रहने से होता है पैरों में दर्द, तुरंत राहत देंगे ये उपाय

महिलाओं का ज्यादातर समय किचन में खड़े होकर काम करते हुए गुजरता है। सुबह के नाश्ते से लेकर रात के डिनर तक की जिम्मेदारी उन्हीं के कंधों पर होती हैं। ऐसे में लगातार खड़े रहने से पैरों में दर्द की समस्या पैदा होने लगती है। लगातार खड़े रहने से पैरों पर दबाव पड़ता है, जिसकी वजह से कई बार पैरों में सूजन और दर्द होने लगता है। अगर आप भी पैरों के दर्द से परेशान रहती हैं तो ये घरेलू उपाय आजमाकर आप इस दर्द से राहत पा सकती हैं। आइए जानते हैं कैसे।

एप्सम सॉल्ट, आप अपने पैरों के दर्द को एप्सम सॉल्ट

दरअसल ये एक तरह का मिनरल होता है। आप इसका इस्तेमाल करने के लिए गर्म पानी से भरे हुए एक टब में ये नमक मिला दें। इसके बाद आप अपने पैरों को इस पानी में १५ से २० मिनट के लिए डूबोकर रखें। ऐसा करने से आपके पैरों का दर्द ठीक हो जाएगा।

सरसों का तेल

सरसों के तेल से पैरों की मालीश करने से दर्द दूर होता है। अगर आपके पैरों में दर्द है तो सरसों के तेल से मालीश करने के बाद कुछ देर लेटकर आराम करें। पैरों की मालीश करने से पैरों की मसल्स की जकड़न कम होने के साथ दर्द से भी राहत मिलेंगी।

सेब का सिरका- सेब के सिरके की मदद से आप पैरों में दर्द की समस?या दूर कर सकते हैं। लगातर खड़े रहने या बैठे रहने की वजह से पैरों में दर्द होने लगे तो एक टब में गर्म पानी लें। उसमें सेब का सिरका डालकर अपने पैरों को इस पानी में कुछ देर के लिए डुबो दें। इस पानी में पैर डुबोकर रखने से पैरों में दर्द की समस्या दूर होगी।

स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज- पैरों में दर्द की समस्या दूर करने लिए आप स्ट्रेचींग एक्सरसाइज कर सकते हैं। स्ट्रेचींग करने के लिए जमीन पर बैठ जाएं। पैरों को सीधा कर लें। फीर पैर की उंगलीयों को हाथ से पकड़ें। फिर पैर की उंगलीयों को अंदर की तरफ मोड़ें। इसे २ से ३ बार दोहराएं फीर सामान्य अवस्था में आ जाएं।

हल्का ख्वातीन जमात-ए-इस्लामी हिंद अकोला और जीआईओ यूनिट अकोला द्वारा सफल जश्ने सीरत-उन-नबी का आयोजन

अकोला-

रबीउल अव्वल के महीने में सफा मोरल एजुकेशन महाराष्ट्र ने जमात-ए-इस्लामी हिंद महाराष्ट्र के तत्वावधान में पूरे महाराष्ट्र में सीरत-उन-नबी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया, जिसमें कई प्रतियोगिताएं राज्य स्तर पर आयोजित की गईं और कई प्रतियोगिताएं स्थानीय यूनिट्स पर आयोजित हुईं। इस अवसर पर जमात-ए-इस्लामी हिंद अकोला के तत्वावधान में इसकी सहायक संगठन जीआईओ यूनिट अकोला ने भी लिखित क्विज़ प्रतियोगिता और भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें २३ स्कूलों से लगभग ५५० छात्राओं ने हिस्सा लिया। ये प्रतियोगिताएं २१ सितंबर को रहबर हाई स्कूल एंड जूनियर कॉलेज अकोला में आयोजित हुईं। आज १२

अक्टूबर, रविवार को अकोला के प्रसिद्ध खेड़कर हॉल, रामदास पेठ में एक भव्य जश्ने सीरत-उन-नबी में इन प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरित किए गए। इस भव्य जश्ने सीरत-उन-नबी में मुख्य अतिथि के रूप में माननीया नफीसा अतक साहिबा (सेक्रेटरी, हल्का ख्वातीन जमात-ए-इस्लामी हिंद महाराष्ट्र और विदर्भ क्षेत्र) के साथ-साथ माननीया आयमन शादाब साहिबा (सदस्य, ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ जीआईओ) ने शिरकत की।

अतिथियों ने अपने संबोधन में छात्राओं और महिलाओं को नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत के अनुसार अपनी जिंदगी जीने की नसीहत की। अंत में सभी पुरस्कार विजेता छात्राओं को ट्रॉफी, सर्टिफिकेट और नकद राशि दी गई, साथ ही सभी २३ स्कूलों को उनकी छात्राओं के सर्टिफिकेट, मेडल्स और स्कूलों को जमात-ए-इस्लामी हिंद अकोला के शिक्षा विभाग की ओर से उपहार दिए गए। इस भव्य जश्ने सीरत-उन-नबी में लगभग आठ सौ महिलाओं और छात्राओं ने हिस्सा लिया।

ट्रेन में चढ़ते ही सराफा व्यापारी का २.३ किलो सोना चोरी, व्यवसायियों में हड़कंप

अमरावती-

दीपावली से पहले सराफा व्यापारियों में बड़ी दहशत फैल गई है। बीती शाम बडनेरा रेलवे स्टेशन पर हावड़ा-मुंबई मेल में चढ़ते ही एक सराफा व्यापारी का करीब २३०० ग्राम सोने से भरा बैग अज्ञात चोरों ने उड़ा लिया। चोरी गए गहनों की कीमत करोड़ों में बताई जा रही है। इस दुस्साहसी वारदात से सराफा व्यवसायियों में जबरदस्त भय और हड़कंप का माहौल है। जानकारी के मुताबिक, जलगांव के सराफा व्यापारी किशोर वर्मा अमरावती के व्यापारियों को दीपावली के लिए माल दिखाने और ऑर्डर लेने के लिए शहर आए हुए थे। दिनभर काम निपटाने के बाद, वह शाम करीब ७ बजे जलगांव वापस जाने के लिए बडनेरा रेलवे स्टेशन पहुंचे। वर्मा ने स्टेशन पर जैसे ही हावड़ा-मुंबई मेल में प्रवेश किया, तभी मौका देखकर किसी अज्ञात शख्स ने गहनों से भरा उनका बैग चुरा लिया। ट्रेन में चढ़ने के तुरंत बाद जब वर्मा को बैग गायब दिखा, तो उनके होश उड़ गए। उन्होंने बिना देरी किए घटना की सूचना तुरंत रेलवे पुलिस (जीआरपी) को दी।मामले की गंभीरता को देखते हुए, जीआरपी ने तुरंत हरकत में आई। पुलिस ने स्टेशन के भीतर और बाहर लगे सभी सीसीटीवी कैमरों को खंगालना शुरू कर दिया है। चोरी की घटना ऐसे समय हुई है जब त्योहारों के कारण सराफा व्यापारी बड़ी मात्रा में आभूषण लेकर यात्रा कर रहे हैं। फिलहाल, चोरों का कोई सुराग नहीं लग सका है। बडनेरा रेलवे पुलिस मामले की गहन जांच कर रही है और आरोपियों की तलाश में जुटी हुई है। इस चोरी की घटना ने रेलवे स्टेशन पर यात्रियों और व्यापारियों की सुरक्षा पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

वाहनों के लिए पसंदीदा नंबरों की 'आरटीओ' कार्यालय की ओर से नीलामी

अकोला:

क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय (आरटीओ) में दोपहिया वाहनों के लिए नई नंबर श्रृंखला शुरू की गई है। इच्छुक वाहन मालिक नियमित निर्धारित शुल्क जमा कर सकते हैं, जबकि निजी चारपहिया वाहनों के लिए निर्धारित शुल्क का तीन गुना शुल्क भरकर आकर्षक या पसंदीदा नंबर आरक्षित कर सकते हैं।इच्छुक नागरिकों को १४ अक्टूबर को सुबह १०:३० बजे से दोपहर २:३० बजे के बीच निर्धारित प्रारूप में आवेदन पत्र, आधार कार्ड, निवास प्रमाण और पैन कार्ड की स्वप्रमाणित प्रतियों को बंद लिफाफे में आरटीओ कार्यालय के कैश विभाग में जमा कराना होगा। लिफाफे पर वाहन मालिक का नाम, वाहन वर्ग, पसंदीदा नंबर और आधार से लिंक मोबाइल नंबर स्पष्ट रूप से लिखा होना चाहिए। यदि किसी एक नंबर के लिए एक से अधिक आवेदन आते हैं तो उनकी सूची उसी दिन दोपहर ३ बजे कार्यालय के नोटिस बोर्ड पर प्रदर्शित की जाएगी। इस सूची में जिन आवेदकों का नाम और पसंदीदा नंबर होगा, उन्हें १५ अक्टूबर दोपहर २:३० बजे तक डिमांड ड्राफ्ट के माध्यम से नीलामी शुल्क जमा करना होगा। इसके बाद उसी दिन शाम ४ बजे उप क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी के कक्ष में नीलामी की प्रक्रिया आयोजित की जाएगी। पसंदीदा नंबरों के लिए संशोधित शुल्क लागू रहेगा। डीडी केवल Regional Transport Office Akola (RTO Akola) के नाम पर किसी राष्ट्रीयकृत या अनुसूचित बैंक की अकोला शाखा का होना चाहिए और वह २ महीने से अधिक पुराना नहीं होना चाहिए। किसी अन्य नाम पर बना डीडी स्वीकार नहीं किया जाएगा। साथ में पैन कार्ड की स्वप्रमाणित प्रति जोड़ना अनिवार्य होगा। नीलामी में आकर्षक / पसंदीदा नंबर के लिए मूल निर्धारित शुल्क का एक डीडी और बोली के अनुसार अतिरिक्त राशि का दूसरा डीडी अनिवार्य होगा।नीलामी के लिए केवल एक ही डीडी पैकेट मान्य होगा। यदि किसी आवेदक द्वारा एक ही नंबर के लिए एक से अधिक आवेदन दिए गए तो ऐसे सभी आवेदन रद्द कर दिए जाएंगे। यदि किसी एक नंबर के लिए समान राशि के डीडी प्राप्त होते हैं तो विजेता का चयन लॉटरी (चिट्ठी निकालकर) के माध्यम से किया जाएगा, और यह निर्णय सभी पर लागू होगा।पसंदीदा नंबरों की अग्रिम बुकिंग केवल अकोला क्षेत्रीय परिवहन कार्यालय के कार्यक्षेत्र के पते वाले वाहनधारकों द्वारा ही की जा सकेगी। वाहन मालिक निर्धारित शुल्क जमा कर पसंदीदा पंजीकरण नंबर सुरक्षित कर सकते हैं। पसंदीदा पंजीकरण नंबर की वैधता १८० दिन होगी। यदि इस अवधि में वाहन का पंजीकरण नहीं कराया गया तो नंबर की वैधता समाप्त हो जाएगी और वह नंबर पोर्टल पर अन्य आवेदकों के लिए उपलब्ध हो जाएगा।नीलामी प्रक्रिया पूरी होने के बाद जिन आवेदकों को पसंदीदा नंबर जारी किए जाएंगे,

संग्रामपूर में नई विद्यालय प्रबंधन समिति गठित.. शारदा राजनकार अध्यक्ष, प्रवीण टाकसाले उपाध्यक्ष

संग्रामपुर-

स्थानीय जिला परिषद मराठी कन्या विद्यालय और आठवड़ी बाजार स्थित जिला परिषद मराठी प्राथमिक केंद्रीय बालक विद्यालय को एकत्र कर नई विद्यालय प्रबंधन समिति गठित की गई है। ९ अक्टूबर को आयोजित बैठक में शारदा गजानन राजनकर को सर्वसम्मति से समिति अध्यक्ष और प्रवीण टाकसाले को उपाध्यक्ष चुना गया। उपाध्यक्ष प्रवीण टाकसाले संग्रामपूर में कृषि विभाग में कार्यरत हैं। प्रबंधन समिति के सदस्य के रूप में दयालसिंग चव्हाण, कविता अमोल सोनोने, श्रीकांत भोंबळे, राहुल वानखडे, शिवशंकर सुरत्ने, पूजा तायडे, शारदा कराळे, रीना वानखडे, पदमा राऊत, शेख अमीर शेख शेखजी और स्वाती आपतूरकर का चयन किया गया।

नव-निर्वाचित अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और सभी सदस्यों का सम्मान विद्यालय की मुख्याध्यापिका श्रीमती ताई खंडारे के हाथों किया गया। इस अवसर पर शिक्षक गिरीश इंगळे, रामदास गोगटे, शांताराम अडकणे, वर्षा घायल, मंगला सोळंके सहित अन्य शिक्षक, शिक्षिकाएँ, शिक्षकेत्तर कर्मचारी तथा बड़ी संख्या में अभिभावक उपस्थित रहे।

फरार गांजा तस्कर गिरफ्तार, मां-बेटे के पकड़े जाने के मामले में कार्रवाई

नागपुर-

ग्रामीण पुलिस की मादक पदार्थ विरोधी टीम (एंटी-नारकोटिक्स सेल) ने रविवार को पारडी क्षेत्र में छापा मारकर एक फरार गांजा विक्रेता को गिरफ्तार किया। आरोपी को मौदा थाने के सुपुर्द किया गया है। यह वही आरोपी है, जो कुछ दिन पहले मौदा थाना क्षेत्र में मां-बेटे को गांजे के साथ पकड़े जाने के मामले में फरार था। गिरफ्तार आरोपी की पहचान मोहम्मद शकील मोहम्मद इस्माइल (४५), निवासी – पारडी के रूप में हुई है। मां-बेटे से मिला था सुराग उल्लेखनीय है कि २२ सितंबर को ग्रामीण पुलिस की मादक पदार्थ विरोधी टीम ने मौदा थाना अंतर्गत गश्त के दौरान ग्राम वडोदा निवासी राहुल नामदेवराव ठाकरे (३२) और उसकी मां शोभा ठाकरे (६२) को ४ किलो २२५ ग्राम गांजे के साथ पकड़ा था, जिसकी कीमत लगभग ४२,००० आंकी गई थी। इस कार्रवाई में गांजा, नकदी और मोबाइल फोन समेत करीब ?१.५ लाख का माल जब्त किया गया था। पूछताछ में मां-बेटे ने खुलासा किया था कि उन्होंने गांजा शकील से खरीदा था।कार्रवाई की भनक लगते ही शकील मौके से फरार हो गया था। पुलिस की जांच जारी थी, और रविवार को मिली गुप्त सूचना के आधार पर टीम ने पारडी में छापा मारकर शकील को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को मौदा पुलिस के हवाले कर आगे की जांच शुरू की गई है। वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन में कार्रवाई यह कार्रवाई पुलिस अधीक्षक हर्ष पोद्दार, अपर अधीक्षक अनिल मस्के और उपविभागीय अधिकारी संतोष गायकवाड़ के मार्गदर्शन में की गई। ऑपरेशन में सहायक निरीक्षक अजितसिंह देवरे, उपनिरीक्षक प्रवीण भिमटे, प्रकाश ढोके, दिनेश गाडगे, अमोल नागरे, अनिल खरडकेले और तुषार गजभिये की भूमिका रही।

अश्लीलता नहीं तो गाली देना अपराध नहीं, हाईकोर्ट ने प्राध्यापक पर दर्ज मामला किया रद्द

नागपुर-

बॉम्बे हाईकोर्ट की नागपुर खंडपीठ ने एक महत्वपूर्ण फैसला सुनाते हुए स्पष्ट किया है कि गंदी, अपमानजनक या गाली-गलौज वाली भाषा का प्रयोग अपने आप में भारतीय दंड संहिता की धारा २९४ के तहत अपराध नहीं है, जब तक उसमें अश्लीलता शामिल न हो या किसी व्यक्ति को वास्तविक कष्ट या परेशानी न हुई हो। यह फैसला न्यायमूर्ति एम. नेर्लीकर ने सुनाया। धारा २९४ के अनुसार, किसी सार्वजनिक स्थान पर अश्लील हरकत करना या अश्लील शब्दों या गीतों का प्रयोग करना अपराध माना जाता है, जिसके लिए तीन महीने की जेल, जुर्माना या दोनों का प्रावधान हैं। यह मामला भंडारा जिले के साकोली स्थित एक पॉलिटेक्निक कॉलेज के प्राध्यापक अमित अशोक जगदाले से संबंधित था। उन पर आरोप था कि उन्होंने ऑफिस की खिड़कियों और टीवी को नुकसान पहुंचाया और प्राचार्य को गाली देते हुए धमकाया, जिससे लगभग एक लाख रुपये का नुकसान हुआ। साकोली की कनिष्ठ अदालत और भंडारा सत्र न्यायालयदोनों ने जगदाले की याचिका (मामला रद्द करने के अनुरोध) को खारिज कर दिया था। इसके बाद उन्होंने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया। जगदाले के वकील आई. एस. चारलेवार ने तर्क दिया कि, 'भले ही चार्जशीट में लिखी सभी बातें सही मानी जाएं, फिर भी धारा २९४ लागू नहीं होती।

३४ लाख रुपए की ठगी में गिरफ्तार पूर्व सैनिक, सरकारी नौकरी दिलाने का दिया था झांसा

नागपुर-

बेरोजगार युवाओं और विद्यार्थियों को रेलवे, आर्मी, पुलिस सहित अन्य विविध विभागों में सरकारी नौकरी दिलाने का झांसा देकर उनसे लाखों रुपए की ठगी करने वाले एक पूर्व सैनिक को कुही पुलिस ने गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपी पुरूषोत्तम ज्ञानदेव बिलेवार (४२), सैनिक कॉलोनी शेगांव, बुलढाणा निवासी है। यह पूर्व सैनिक है और अपना यू-टयूब चैनल भी चलाता है। वह इस यू-टयूब चैनल और इंस्टाग्राम के जरिए वीडियो तैयार कर बेरोजगार युवाओं व विद्यार्थियों के साथ संपर्क कर उन्हें सरकारी नौकरी दिलाने का झांसा देकर उनसे धोखाधड़ी करता है। ११ पीड़ितों की अभी जानकारी पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, एक बेरोजगार पीड़ित शिकायतकर्ता व उसके दोस्त के साथ आरोपी पुरुषोत्तम बिलेवार ने नौकरी दिलाने का लालच देकर उनके साथ करीब १४.६० लाख

रुपए की ठगी की। इसकी शिकायत पीड़ित शिकायतकर्ता ने कुही थाने में १५ सितंबर को शिकायत दर्ज कराई। कुही पुलिस को जांच के दौरान पता चला कि आरोपी ने ११ बेरोजगारों को सरकारी नौकरी दिलाने का झांसा देकर उनसे करीब ३४.६०,००० रुपए की ठगी की है।पुलिस अधीक्षक हर्ष ए. पोद्दार, अपर पुलिस अधीक्षक अनिल म्हस्के और सहायक पुलिस अधीक्षक व उपविभागीय पुलिस अधिकारी उमरेड की श्रीमती वृष्टि जैन के मार्गदर्शन में पुलिस ने कार्रवाई शुरू कर तकनीक के आधार पर आरोपी पुरुषोत्तम बिलेवार को शेगांव बुलढाणा से शेगांव ग्रामीण पुलिस की मदद से धर-दबोचा। तलाशी के दौरान आरोपी के घर से नोट गिनने की मशीन भी मिली है। कुही पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया। न्यायालय ने उसे १४ अक्टूबर २०२५ तक पुलिस रिमांड पर भेजने का आदेश दिया है। मेडिकल क्लीयर कराने का वादा आरोपी अपने यू-टयूब चैनल के माध्यम से बेरोजगारों से संपर्क करने के बाद लाखों रुपए लेकर सरकारी नौकरी दिलाने का झांसा देता था। वह मेडिकल जांच भी क्लीयर कराने का वादा करता था। आरोपी का यू-टयूब चैनाल के अलावा शिर्डी रोड पर बहीरम हंडी नामक होटल है, जिसका यह मालिक भी है। पुलिस ने आह्वान किया है कि इस आरोपी द्वारा कोई भी पीड़ित कुही थाने में संपर्क कर शिकायत दे सकते हैं। पुलिस निरीक्षक प्रशांत काल से मोबाइल नंबर ९९२३२८६२२४ पर संपर्क कर शिकायत दे सकते हैं।

कैरम खिलाड़ी राज्य का नाम रोशन करें - अज़हर हुसैन

अकोला-

राष्ट्रीय कैरम चैंपियनशिप के लिए चुने गए खिलाड़ी उत्कृष्ट खेल भावना का प्रदर्शन कर ग्वालियर में आयोजित राष्ट्रीय कैरम चैंपियनशिप में महाराष्ट्र का नाम ऊंचा करें.यह बात महाराष्ट्र के पूर्व खेल मंत्री प्रो. खान मोहम्मद अज़हर हुसैन ने रविवार को विदर्भ कैरम एसो.द्वारा आयोजित राज्य कॅरम टीम चयन परीक्षा प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण समारोह में कही. वे १ से ४ नवंबर तक ग्वालियर में आयोजित होनेवाली ५०वीं जूनियर और यूथ बालक-बालिका राष्ट्रीय कैरम चैंपियनशिप के लिए चुनी गई टीम के खिलाड़ियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए बोल रहे थे. विदर्भ राज्य टीम का चयन अकोला शहर से होना महत्वपूर्ण होने की बात बोलकर प्रसिद्ध शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. पार्थसारथी शुक्ला ने चयनित खिलाड़ियों को बधाई दी.इस चयनीत युवा वर्ग में सूरज गायकवाड अकोला, श्रीकांत निखारे भंडारा, बालिका श्रावणी पैघान यवतमाल, निहारिका मस्करे अकोट जूनियर ग्रुप टीम, शेख अरसनल अकोला, वंश बैसारे नागपुर, अर्नव पटेल, अमीरुद्दीन, मोहम्मद तालीम, सोहम सतारकर अकोला,बालिका माधवी निषाद नागपुर, कीर्ति जाधव और अर्पिता करवते अकोला, पूर्वा बावनकर यवतमाल, मयूरी जांबरे और आरुषि अकोला के टीम की घोषणा विदर्भ कैरम एसो.के सचिव प्रभजीत सिंह बछेर ने की. युवतियो के प्रतियोगिता का उद्घाटन चीमा इंडस्ट्रीज के करण चीमा, बीजीई सोसाइटी के कार्यकारी सदस्य अमित सुरेखा, डॉ. अमित हेडा, एड सुभाष मुंगी, अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार विजेता प्रशांत रामदास वराले की उपस्थिति में हुआ. परिचय विदर्भ कैरम एसो. के कार्यकारिणी सदस्य एड.सुभाष सिंह ठाकुर ने दिया. प्रतियोगिता को सफल बनाने के लिए जीतेन्द्र अग्रवाल, तनवीर अहमद खान, तौकीर, किरण पारदे, अभय घोटिकर और पंकज राठी ने अथक परिश्रम किया.

पटवारी की नौकरी दिलाने के नाम पर दिया ८ लाख रुपए की ठगी को अंजाम

नागपुर-

गिट्टीखदान थानांतर्गत एक युवक को पटवारी की नौकरी दिलाने का झांसा देकर बीड़ ज़िले के एक जालसाज़ ने ८ लाख रुपए की चपत लगा दी। बीड़ जिले के ठगबाज ने पटवारी पद के लिए २० लाख रुपए मांगे थे, जिसमें से पीड़ित युवक ने आरटीजीएस सिस्टम के ज़रिए ८ लाख रुपए ट्रांसफर कर दिए थे।पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, पुलिस लाइन टाकली निवासी बलराम बिसेन कांबले (४०) पटवारी की नौकरी की परीक्षा की तैयारी कर रहा था। इसी दौरान, मोबाइल पर तुलजाई नगर बीड़ निवासी आरोपी विक्रम बाबासाहेब डोंगरे ने उससे संपर्क किया और बताया कि मुंबई स्थित मंत्रालय में उसकी पहचान है। डोंगरे ने झांसा दिया कि तुम पटवारी पद की भर्ती की तैयारी कर रहे हो, मैं तुम्हारी नौकरी लगवा दूंगा। इसके लिए उसने कांबले से २० लाख रुपये की मांग की। कहा कि पहले ८ लाख रुपये और बाकी रकम नौकरी लगने के बाद देने पड़ेंगे। कांबले ने आरटीजीएस के ज़रिए डोंगरे को ८ लाख रुपए ट्रांसफर कर दिए। पटवारी परीक्षा के नतीजे आने के बाद, कांबले को उत्तीर्ण उम्मीदवारों की सूची में अपना नाम नहीं दिखा, तब कांबले ने डोंगरे से पैसे वापस मांगे। तब डोंगरे ने कांबले को एक चेक दिया। वह चेक भी पर्याप्त राशि न होने के कारण बाउंस हो गया। धोखाधड़ी का एहसास होने पर कांबले ने उसके खिलाफ गिट्टीखदान पुलिस थाने में शिकायत की।

रेलवे पटरियों पर खतरे में वन्यजीवों की जिंदगी, मालगाड़ी की टक्कर से बाघ की मौत

नागपुर-

जंगल का राजा कहलाने वाला बाघ अब इंसानी विकास की रफ्तार की चपेट में आ रहा है। कभी अपनी दहाड़ से जंगल को गूंजाने वाले ये वन्यजीव अब रेलवे पटरियों पर अपनी जान गंवा रहे हैं। जहां एक ओर हाईवे पर वन्यजीवों के लिए सुरक्षित कॉरिडोर बनाने की योजनाएं तैयार की जा रही हैं, वहीं रेलवे ट्रैक पर बाघों और तेंदुओं की जिंदगी हर दिन खतरे में है। ताजा मामला सोमवार सुबह का है, जब बल्लारशाह–गोंदिया रेलवे लाइन पर टी-४० नामक बाघ 'बिट्टू' की मालगाड़ी से टक्कर में दर्दनाक मौत हो गई। यह बाघ प्रसिद्ध बाघ 'जय' का बेटा था। इस घटना ने एक बार फिर रेलवे पटरियों पर वन्यजीवों की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। बल्लारशाह–गोंदिया रेलवे लाइन अब तक १८ बाघों की जान ले चुकी है। यह ट्रैक घने जंगलों और वन्यजीवों के मार्गों के बीच से गुजरता है — जो उनके लिए किसी अभिशाप से कम नहीं। चंद्रपुर, तडाली, भांदक, राजुरा और बल्लारशाह जैसे इलाकों में जंगल और रेलवे ट्रैक बिल्कुल सटे हुए हैं। किरतगढ़, मरामझीरी, कोला पत्थर और धाराखोह जैसे घाट सेक्शन में अक्सर वन्यजीव पटरियों पर आ जाते हैं और तेज रफ्तार ट्रेनों की चपेट में आकर मारे जाते हैं। पिछले वर्ष चनाखा गांव (राजूरा तहसील) में एक तेंदुए की ट्रेन से टक्कर में मौत हुई थी। इससे पहले भी इसी लाइन पर तीन बाघों की मौत हो चुकी है। करीब तीन साल पहले जुनोना जंगल में दो बाघ शावकों के शव ट्रैक पर मिले थे, जबकि तीसरा शावक पास ही मृत पाया गया था। ये सभी ताडोबा-अंधारी टाइगर रिजर्व क्षेत्र के थे — जो देश में बाघों की सर्वाधिक आबादी के लिए जाना जाता है।पशुप्रेमी और पर्यावरणविद लंबे समय से रेलवे ट्रैकों पर वन्यजीवों की सुरक्षा को लेकर ठोस कदम उठाने की मांग कर रहे हैं। उनके अनुसार, रेलवे लाइनों के पास अंडरपास या ओवरपास (वाइल्डलाइफ कॉरिडोर) बनाए जाने चाहिए, ताकि जानवर सुरक्षित रूप से एक जंगल से दूसरे में जा सकें, लेकिन अब तक इन सुझावों पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं हुई है।

आईआरसीटीसी मामले में दिल्ली की अदालत ने लालू, राबड़ी और तेजस्वी यादव के खिलाफ आरोप तय किए

नई दिल्ली:
दिल्ली की एक जिला अदालत ने सोमवार (१३ अक्टूबर) को राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के लालू प्रसाद यादव, राबड़ी देवी और तेजस्वी यादव के खिलाफ सीबीआई के एक मामले में आरोप तय किए हैं. यह मामला पटना में रियायती जमीन के बदले कथित रेलवे होटलों की अवैध लीजिंग से जुड़ा है. बार एंड बेंच की रिपोर्ट के अनुसार, राउज़ एवेन्यू कोर्ट ने लालू, राबड़ी और तेजस्वी के खिलाफ साजिश और धोखाधड़ी के आरोप तय किए हैं, जबकि लालू के खिलाफ भ्रष्टाचार का भी आरोप लगाया गया है. तीनों ने ही इस मामले में दोष स्वीकार नहीं किया (न्दू उल्ग्लूबइर्ती), जिसके आधार पर मामला अब ट्रायल के लिए जाएगा. अदालत के आदेश की कॉपी अभी प्रतीक्षित है. कोर्ट के फैसले के बाद मीडिया से बातचीत में बिहार के विपक्षी दल के नेता तेजस्वी यादव ने कहा कि वे आरोपों का सामना करेंगे और यह भी कहा कि यह कदम राज्य में आगामी विधानसभा चुनावों से जुड़ा हो सकता है. ज्ञात हो कि साल २०१७ में दर्ज एफआईआर में सीबीआई ने लालू और राबड़ी के साथ उनके पुत्र तेजस्वी का नाम लेते हुए आरोप लगाया था कि राजद के वरिष्ठ नेता ने केंद्रीय रेलवे मंत्री रहते हुए होटलों के मालिकों के साथ साजिश रची और दो आईआरसीटीसी होटलों को अवैध रूप से होटेल मालिकों को लीज़ पर दे दिया, बदले में पटना में रियायती जमीन हासिल की. सीबीआई के अनुसार, साल २००५-०६ में सुधा होटल प्राइवेट लिमिटेड को रांची और पुरी में दो आईआरसीटीसी होटलों के सब-लीज दिए गए. बदले में मालिक ने लगभग तीन एकड़ वाणिज्यिक जमीन बाजार दरों से कम दाम पर डिलाइट मार्केटिंग कंपनी को बेची, जिसमें एक राजद सांसद की पत्नी निदेशक थी. बाद में इस कंपनी के शेयर राबड़ी और तेजस्वी को ट्रांसफर किए गए. सीबीआई ने आरोप लगाया कि टेंडर की शर्तों को आपराधिक साजिश के तहत सुजाता होटल के हित में बदला गया, ताकि कंपनी की ज़रूरतों के मुताबिक़ उन्हें ढाला जा सके. जांच एजेंसी ने यह भी कहा कि पटना की जो ज़मीन इस कथित 'इस हाथ दे उस ले' वाले सौदे के तहत दी गई थी, उसे कृषि भूमि बताकर स्टांप ड्यूटी से बचने की भी कोशिश की गई. एफआईआर में सीबीआई ने दावा किया है कि रेल मंत्री रहते हुए लालू प्रसाद यादव पूरे मामले से वाकिफ थे और आईआरसीटीसी की टेंडर प्रक्रिया पर नज़र रख रहे थे. एजेंसी ने इस मामले में भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) और भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम की धाराएं लगाई हैं. सोमवार को आरोप तय करते समय विशेष न्यायाधीश विशाल गोगने ने कहा कि प्रारंभिक तौर पर यह स्पष्ट होता है कि लालू यादव ने होटलों के हस्तांतरण को प्रभावित करने के लिए हस्तक्षेप किया था. जज ने कहा, 'पूरी प्रक्रिया निजी भागीदारी को बढ़ावा देने के नाम पर चलाई गई क्रोनी कैपिटलिज़्म की मिसाल थी, और यह ट्रांसफर शुरुआती तौर पर धोखाधड़ी से ग्रसित प्रतीत होता है.' सोमवार को दिल्ली में अदालत की कार्यवाही में अपने माता-पिता के साथ मौजूद तेजस्वी यादव ने बाद में कहा कि वे पहले से जानते थे कि चुनाव नज़दीक आने पर ऐसे कदम उठाए जाएंगे. तेजस्वी ने कहा, 'फिर भी, अदालत के फैसले का हम सम्मान करते हैं. हमने हमेशा लड़ाई लड़ी है और आगे भी लड़ते रहेंगे. तूफानों से लड़ना अपने आप में एक अलग सुख देता है. हमने संघर्ष का रास्ता चुना है, और अच्छे यात्री बनकर अपने मंज़िल तक पहुंचेंगे.' ज्ञात हो कि अगले महीने बिहार विधानसभा चुनाव दो चरणों में होने वाले हैं. पहले चरण का मतदान ६ नवंबर को और दूसरे चरण का ११ नवंबर को होना है.

केरल: इंजीनियर ने आरएसएस शाखा में यौन शोषण का आरोप लगाते हुए की ख़ुदकुशी, जांच की मांग

नई दिल्ली:
केरल के तिरुवनंतपुरम में एक २६ वर्षीय सॉफ्टवेयर इंजीनियर आनंदू अजी ने कथित तौर पर बचपन में बार-बार हुए यौन शोषण के कारण गंभीर मानसिक तनाव से जूझते हुए आत्महत्या कर ली. इंडियन एक्सप्रेस की खबर के मुताबिक, बीते गुरुवार (९ अक्टूबर) को उनका शव थम्पनूर इलाके के एक पर्यटक आवास गृह में वहां काम करने वाले कर्मचारियों को मिला था. बताया जा रहा है कि मरने से पहले आनंदू अजी ने अपने एक इंस्टाग्राम पोस्ट में आरोप लगाया था कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के सदस्यों द्वारा बचपन में उनका यौन शोषण किया गया था, जिसके चलते वे अवसाद में थे. इंडियन एक्सप्रेस ने एक अज्ञात पुलिसकर्मी के हवाले से बताया है कि इस संबंध में अप्राकृतिक मौत का मामला दर्ज कर लिया गया है और जांच शुरुआती चरण में है.

क्या लिखा था पत्र में?

अजी के इंस्टाग्राम अकाउंट पर पोस्ट किए गए पत्र में लिखा है, 'मैं किसी से नाराज़ नहीं हूं, सिवाय एक व्यक्ति और एक संगठन के.' उन्होंने आगे कहा, 'यह संगठन आरएसएस है, जिससे मेरे पिता (जो एक बहुत अच्छे इंसान थे) ने मुझे जोड़ा था. यही वह जगह है जहां मुझे उस संगठन और उस व्यक्ति से जीवन भर का ट्रॉमा (सदमा) सहना पड़ा.' उन्होंने आरोप लगाया कि तीन-चार साल की उम्र में 'एनएम' नाम के एक व्यक्ति ने उनका लगातार यौन शोषण किया. पत्र में अजी द्वारा कथित तौर पर कहा गया है कि यह व्यक्ति आरएसएस और भारतीय जनता पार्टी का सदस्य है, जो उनका पड़ोसी है और 'उनका परिवार उसे रिश्तेदार जैसा मानता है'. मालूम हो कि आरएसएस, सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी का पितृ संगठन है. अखबार ने बताया कि इस संबंध में आरएसएस का पक्ष जानने के 'प्रांत प्रचारक' एस. सुदर्शन फोन और मैसेज दोनों किए गए, लेकिन उन्होंने किसी का जवाब नहीं दिया. सात पन्नों के आनंदू अजी के पत्र में यह भी आरोप लगाया गया है कि हिंदुत्व संगठन के अन्य सदस्यों ने आरएसएस द्वारा आयोजित शिविरों के दौरान अजी का यौन और शारीरिक शोषण किया. अजी ने कहा कि बचपन में हुए यौन शोषण के कारण वह गंभीर मानसिक स्वास्थ्य विकारों से पीड़ित हैं. पत्र में लिखा था, 'मुझे पता है कि मैं उनका अकेला शिकार नहीं हूं. कई अन्य बच्चों ने भी उनके हाथों और आरएसएस के शिविरों में दुर्व्यवहार का सामना किया है. यह ज़रूरी है कि इन बच्चों को उचित देखभाल और परामर्श मिले.' उन्होंने पत्र में लिखा कि माता-पिता को अपने बच्चों को व्यापक यौन शिक्षा प्रदान करनी चाहिए. प्रियंका गांधी ने आरएसएस से आरोपों की जांच करने का आह्वान किया वहीं, रविवार को कांग्रेस नेता और वायनाड से सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने आरएसएस से आरोपों की जांच करने का आग्रह किया है और कहा है कि संगठन को अपनी गलती स्वीकार करनी चाहिए. उन्होंने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, 'आरएसएस को इन आरोपों की पूरी जांच करानी चाहिए. अपने आत्महत्या संदेश में आनंदू अजी ने आरोप लगाया था कि आरएसएस के कई सदस्यों ने उनके साथ बार-बार दुर्व्यवहार किया. उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वे अकेले पीड़ित नहीं हैं और आरएसएस के शिविरों में बड़े पैमाने पर यौन शोषण हो रहा है. अगर यह सच है, तो यह भयावह है.' प्रियंका गांधी ने आगे कहा, 'पूरे भारत में लाखों छोटे बच्चे और किशोर इन शिविरों में जाते हैं. आरएसएस नेतृत्व को तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए और अपनी बात स्पष्ट करनी चाहिए. लड़कों का यौन शोषण लड़कियों के यौन शोषण जितना ही व्यापक है. इन अवर्णनीय रूप से जघन्य अपराधों के बारे में चुप्पी तोड़नी होगी.' द न्यू इंडियन एक्सप्रेस की रिपोर्ट के अनुसार, केरल की सत्तारूढ़ भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) और उसकी युवा शाखा, डेमोक्रेटिक यूथ फेडरेशन ऑफ इंडिया ने अजी द्वारा लगाए गए आरोपों की जांच के लिए पुलिस को लिखित शिकायत दी है. वहीं, डीवाईएफआई के राज्य महासचिव वीके सनोज ने दावा किया, 'हम बार-बार आरएसएस की शाखाओं में हो रही घटनाओं के बारे में बात करते रहे हैं.

कई लोग आरएसएस में शामिल हुए थेष्ठ उनकी मौत ऐसे लोगों के लिए एक चेतावनी है.' (अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं– दोस्त या परिजन– जो मानसिक रूप से परेशान हैं और आत्महत्या का जोखिम है, तो कृपया उनसे संपर्क करें. सुसाइड प्रिवेंशन इंडिया फाउंडेशन के पास उन फोन नंबरों की एक सूची है जिन पर कॉल करके वे गोपनीयता से बात कर सकते हैं. टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज द्वारा संचालित परामर्श सेवा, आईकॉल ने देश भर के चिकित्सकों/थेरेपिस्ट की एक क्राउडसोर्स्ड सूची तैयार की है. आप उन्हें नज़दीकी अस्पताल भी ले जा सकते हैं.)

सुप्रीम कोर्ट का निर्देश- तमिलनाडु के करूर में हुई भगदड़ की जांच करे सीबीआई

नई दिल्ली:
सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार (१३ अक्टूबर) को तमिल अभिनेता विजय की पार्टी तमिलगा वेत्रि कषगम (टीवीके) की रैली के दौरान करूर में हुई भगदड़ की घटना की जांच सीबीआई को सौंपने का आदेश दिया है. यह हादसा २७ सितंबर को हुआ था, जिसमें कम से कम ४१ लोगों की मौत हुई थी. जांच की निगरानी करने के लिए तीन सदस्यीय समिति गठित की गई है, जिसकी अध्यक्षता सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश जस्टिस अजय रस्तोगी करेंगे. बार एंड बेंच की रिपोर्ट के अनुसार, समिति में आईजीपी या उससे ऊपर के पद के दो वरिष्ठ पुलिस अधिकारी भी होंगे. ये अधिकारी तमिलनाडु कैडर के तो हो सकते हैं, लेकिन राज्य के निवासी नहीं होंगे. इन दोनों अधिकारियों का चयन जस्टिस रस्तोगी करेंगे. यह फैसला उस समय आया है जब तमिल

अभिनेता और नेता विजय के नेतृत्व वाली टीवीके ने मद्रास हाईकोर्ट के आदेश को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी. हाईकोर्ट ने इस मामले की जांच के लिए स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम (एसआईटी) गठित करने का निर्देश दिया था. इससे पहले मदुरै बेंच द्वारा सीबीआई जांच से इनकार किए जाने और मुख्य पीठ द्वारा एसआईटी जांच के निर्देश दिए जाने के हाईकोर्ट के इन दो आदेशों पर सुप्रीम कोर्ट ने सवाल उठाए थे. सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सीबीआई हर महीने समिति को जांच की रिपोर्ट देगी, और समिति अपने कार्य की प्रक्रिया जस्टिस रस्तोगी के मार्गदर्शन में तय करेगी. इससे पहले, मद्रास हाईकोर्ट ने टीवीके नेतृत्व की भगदड़ के बाद की उनकी भूमिका पर नाराज़गी जताई थी. हालांकि विजय का नाम किसी एफआईआर में नहीं है, लेकिन अदालत ने राज्य सरकार को निर्देश दिया था कि वह दो कथित हिट-एंड-रन घटनाओं पर आपराधिक मामला दर्ज करे, जिनमें विजय की बस के शामिल होने का आरोप है.

अर्बन नक्सल, ख़ान मार्केट गैंग कहकर करते हैं बदनाम: रिटायर्ड हाईकोर्ट न्यायाधीश ने किया संघ परिवार पर प्रहार

नई दिल्ली:
ओडिशा हाईकोर्ट के चीफ जस्टीस के पद से रिटायर जस्टिस एस. मुरलीधर ने आरएसएस के विभाजनकारी एजेंडा की आलोचना कड़ी आलोचना की है. साथ ही संघ द्वारा गलत इतिहास पढ़ाए जाने की ओर ध्यान दिलाया है. जस्टिस मुरलीधर ने ये बातें रविवार, १२ अक्टूबर २०२५ को दिल्ली में आयोजित प्रो. जीएन साईबाबा के पहले मेमोरियल लेक्चर में कही. 'टीचिंग अ लेसन?: एकेडमिक फ्रीडम एंड द इंडियन स्टेट' विषय पर बोलते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता और सेवानिवृत्त न्यायाधीश ने भारत की शिक्षा व्यवस्था, अकादमिक स्वतंत्रता और मौजूदा सरकार की नीतियों पर तीखी टिप्पणी की. पूर्व जज ने प्रो. साईबाबा को पूर्व जज ने एक विद्वान के रूप में याद किया. 'क्या पढ़ाया जाएगा, कैसे पढ़ाया जाएगा, कौन पढ़ाएगा, किसे पढ़ाएगा, किस विषय पर लिखा या टिप्पणी की जा सकती है, अब इन सबका फैसला शैक्षणिक संस्थान नहीं करते. अब इनके लिए कुछ बाहरी और गैर-कानूनी तंत्रों से मंजूरी लेनी होती है.' जज ने कहा. संस्थागत दमन, असहिष्णुता, सत्ता के हस्तक्षेप और शिक्षकों-विद्यार्थियों के अधिकारों के सवालों को उठाते हुए उन्होंने कहा, '२०२५ के भारत में फैज़ अहमद फैज़ की कविता 'बोल' का पाठ किया जा सकता है लेकिन नियम और शर्तें लागू होती हैं. कैंपस में 'हम देखेंगे' या 'आज़ादी' के नारे लगाने से आप पर अर्बन नक्सल, टुकड़े-टुकड़े गैंग, खान मार्केट टाइप या जेएनयू टाइप का लेबल लग सकता है.' ध्यान रहे कि साल २०१९ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पहली बार 'खान मार्केट गैंग' शब्द का उपयोग किया था. यह शब्द उन्होंने कांग्रेस पार्टी और उनके समर्थकों के कथित समूह को संदर्भित करने के लिए इस्तेमाल किया, जिन्हें वह दिल्ली के उच्च वर्गीय और अंग्रेज़ी बोलने वाले बुद्धिजीवियों के रूप में देखते हैं. मई २०१९ में द इंडियन एक्सप्रेस को दिए एक साक्षात्कार में मोदी ने कहा था, 'मेरी छवि 'खान मार्केट गैंग' या 'लुटियन्स दिल्ली' द्वारा नहीं बनाई गई है, बल्कि यह ४५ वर्षों की तपस्या का परिणाम है.' मोदी सरकार में शिक्षा के माध्यम से युवाओं के मन पर कब्ज़ा करने की हो रही कोशिशों पर रोशनी डालते हुए जस्टिस मुरलीधर कहते हैं, 'पिछले दशक में शिक्षा के क्षेत्र में हुए बदलावों को जब पीछे हटकर देखा जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि जनता और विशेष रूप से युवाओं के दिमाग पर असर डालने का प्रयास कितनी गहराई से और लगातार किया गया है. इसमें एक संगठित कोशिश है कि शिक्षा से हर उस चीज़ को हटा दिया जाए जो सत्तारूढ़ व्यवस्था की नीतियों और कार्यों पर सवाल उठाती हो. विज्ञान को खारिज करने और अतीत की उपलब्धियों को महिमा मंडित करने में एक घमंड सा दिखाई देता है.' जस्टिस मुरलीधर ने अपने लेक्चर में बताया कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) किस तरह का भ्रामक इतिहास बच्चों को पढ़ा रहा है, 'आरएसएस का एक शैक्षणिक संगठन है- विद्या भारती. कहा जाता है कि यह देशभर में १२,७५४ औपचारिक स्कूल और १२,६५४ अनौपचारिक स्कूल चलाता है, जिससे करीब ७७ लाख छात्र और लगभग १.५ लाख शिक्षक जुड़े हुए हैं. इनमें से ज़्यादातर स्कूल सीबीएसई, अलग-अलग राज्य बोर्डों, और नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग से संबद्ध हैं. विद्या भारती की किताबें हिंदी सहित १२ अन्य क्षेत्रीय भाषाओं- जैसे बांग्ला, तमिल और उड़िया में प्रकाशित होती हैं. ये किताबें सरकार द्वारा स्वीकृत पाठ्यक्रम के अतिरिक्त पढ़ाई जाती हैं.' एक मीडिया रिपोर्ट का हवाले से जस्टिल मुरलीधर आगे कहते हैं: 'बोधमाला ४' नाम की एक किताब, जो चौथी कक्षा के बच्चों के 'सांस्कृतिक ज्ञान' को बढ़ाने के लिए गई है, उसके पेज ५ पर दिया गया सवाल-जवाब, ध्यान खींचने वाला है. प्रश्न: हमारी मौजूदा सीमाओं से लगे कौन-कौन से देश पहले हमारे देश का हिस्सा थे? उत्तर: पूर्व में ब्रह्मदेश (म्यांमार) और बांग्लादेश, पश्चिम में पाकिस्तान और अफगानिस्तान, उत्तर में तिब्बत, नेपाल और भूटान, और दक्षिण में श्रीलंका. उसी श्रृंखला की एक शिक्षक मार्गदर्शिका में यह अतिशयोक्तिपूर्ण दावा किया गया है: पहले संपूर्ण जंबूद्वीप में हिंदू संस्कृति का प्रभुत्व थाष्ठ जिसे हम आज एशिया कहते हैं, वह प्राचीन जंबूद्वीप कहलाता था. मिस्र, सऊदी अरब, इराक, ईरान, कज़ाखस्तान, इज़राइल, रूस, मंगोलिया, चीन, म्यांमार, इंडोनेशिया, मलेशिया, जावा, सुमात्रा, भारत, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, पाकिस्तान और अफगानिस्तान, ये सभी उसी का हिस्सा थे. जस्टिस मुरलीधर जोड़ते हैं, 'अगर यह सब कुछ 'इंडियन नॉलेज सिस्टम' के नाम पर चल रहे एक बड़े अभियान का हिस्सा न होता, तो शायद चिंता की बात नहीं होती.'

जिला परिषद प्रारूप आरक्षण की अधिसूचना जारी

अकोला जिला परिषद की ५२ सीटों पर आरक्षण की घोषणा..जिलाधिकारी की उपस्थिती

अकोला-

जिला परिषद के ५२ सर्किलों के लिए आज प्रारूप आरक्षण की लॉटरी जिला कलेक्टर वर्षा मिना की उपस्थिति में नियोजन भवन में निकाली गई। इसके अनुसार प्रारूप आरक्षण की अधिसूचना आज जारी की गई। इस मौके पर निवासी उप जिलाधिकारी सहित अधिकारी-कर्मचारी और विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

प्रारूप आरक्षण अधिसूचना पर किसी को आपत्ति होने पर १७ अक्टूबर तक तहसीलदार के पास दर्ज करानी होगी। इसके बाद दर्ज की गई कोई भी आपत्ति मान्य नहीं की जाएगी।

लॉटरी के अनुसार, अनुसूचित जाति के लिए कुल १२ सीटें (महिला ६), अनुसूचित जनजाति के लिए ५ सीटें (महिला ३), अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए १४ सीटें (महिला ७) और सामान्य वर्ग के लिए २१ सीटें (महिला १०) निर्धारित की गई हैं। इस प्रकार कुल ५२ सीटों में से २६ सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित की गई हैं।

तालुका अनुसार आरक्षण विवरण

- **तेल्हारा-** दानापुर – सामान्य (महिला), अडगांव बु. – अनुसूचित जनजाति, शिरसोली – सामान्य, बेलखेड –सामान्य (महिला) पाथर्डी – सामान्य, दहिगांव – सामान्य, भांबेरी – सामान्य
- **अकोट-** उमरा – ओबीसी (महिला), अकोलखेड – एसटी (महिला), अकोली जहांगीर – एसटी (महिला), वडाळी देशमुख – सामान्य (महिला), मुंडगांव – ओबीसी (महिला), वरूर – ओबीसी (महिला), कुटासा – सामान्य, चोहोट्टा – सामान्य (महिला)
- **मूर्तिजापुर-** लाखपुरी – एससी, शेलू (बाजार) – एससी, कुरूम – सामान्य, माना – सामान्य (महिला), सिरसो – एससी, हातगाव – ओबीसी (महिला), कानडी – एससी (महिला)
- **अकोला-** आगर – ओबीसी, दहिहंडा – एससी (महिला), घुसर – एसटी (महिला), उगवा – एससी, बाभुळगाव – एससी, कुरणखेड – ओबीसी, कानशिवणी –एससी (म.), बोरगाव मंजू – ओबीसी (म.), चांदूर – ओबीसी, चिखलगाव – सामान्य (म.)
- **बाळापूर-** अंदुरा – एससी (महिला), हातरूण – ओबीसी, निमकर्दा – एससी (महिला), व्याळा – सामान्य, पारस १ – सामान्य देगाव – एससी, वाडेगाव – ओबीसी.
- **बार्शिटाकली-** कान्हेरी सरप – ओबीसी (महिला), दगडपारवा – सामान्य (महिला), पिंजर – सामान्य (महिला), झोडगा – सामान्य (महिला), महान – सामान्य, राजंदा – ओबीसी, जामवसू – सामान्य
- **पातूर-** शिर्ला –एससी (महिला), चोंडी – एसटी, विवरा –सामान्य, सस्ती –ओबीसी, पिंपळखुटा – ओबीसी, आलेगाव – सा. (म.)

अकोला जिला महिला अस्पताल प्रशासन के खिलाफ पूर्व सैनिक किसन गायकवाड का आमरण अनशन

अकोला-

अकोला के जिला महिला अस्पताल, दुर्गा चौक के सामने माजी सीमा प्रहरी किसन संपत गायकवाड ने प्रशासन के खिलाफ आमरण अनशन शुरू किया। गायकवाड का कहना है कि उन्हें अस्पताल प्रशासन और विशाखा समिति द्वारा दिए गए एकतरफा और कथित झुटे अहवाल के आधार पर मेस्को कंपनी ने नौकरी से हटाया, जिससे उन्हें भुखमरी, मानसिक पीड़ा और सामाजिक प्रतिष्ठा में क्षति हुई। गायकवाड ने बताया कि फरवरी २०२४ से अक्टूबर २०२५ तक उन्होंने कई बार न्याय की मांग की, लेकिन उनकी शिकायतों पर ध्यान नहीं दिया गया। २३ सितंबर २०२५ को हुई अन्यायपूर्ण घटना के बाद समिति की बैठक बुलाई गई थी, फिर भी उनकी सुनवाई नहीं हुई। इस उपेक्षा से व्यथित होकर उन्होंने लोकतांत्रिक रास्ते से आमरण अनशन करने का निर्णय लिया।उन्होंने जिलाधिकारी अकोला को लिखित आवेदन देकर अपनी मांग और अनशन की जानकारी दी थी। गायकवाड ने स्पष्ट किया कि यदि अनशन के दौरान उन्हें कोई शारीरिक या चिकित्सकीय हानि होती है, तो उसकी पूरी जिम्मेदारी प्रशासन की होगी।सोमवार से शुरू हुआ यह अनशन तब तक जारी रहेगा जब तक प्रशासन उनकी मांगों पर उचित कार्रवाई नहीं करता। प्रशासनिक अधिकारी इस मामले में अब तक चुप्पी साधे हुए हैं, लेकिन जिले के नागरिक और अन्य लोग इसे गंभीर मामला मानते हुए प्रशासन से शीघ्र समाधान की मांग कर रहे हैं।

दीपावली पर मिठाइयों की दुकानों पर अन्न औषधि विभाग की धीमी कार्रवाई से नागरिकों में रोष

नागरिकों ने उठाया सख्त कदम उठाने की मांग-विभाग पर लापरवाही के आरोप

'इस पूरे मामले पर अन्न औषधि अधिकारी सोलंके ने बताया कि 'दीपावली को ध्यान में रखते हुए अब तक ५० से अधिक नमूने एकत्र किए जा चुके हैं। जिन दुकानों से संदेहास्पद नमूने मिले हैं, उन्हें जांच के लिए भेजा गया है। रिपोर्ट आने के बाद दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। हमारी टीम लगातार निगरानी में है और आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं।'

अकोला-

दीपावली का त्यौहार नजदीक आते ही शहर में मिठाइयों की अस्थायी और स्थायी दुकानें बड़ी संख्या में लग चुकी हैं। इन दुकानों पर ग्राहकों की भीड़ भी बढ़ने लगी है, लेकिन दूसरी ओर अन्न औषधि विभाग की कार्रवाई की रफ्तार बेहद सुस्त दिखाई दे रही है। जांच में सामने आया है कि अधिकांश दुकानों पर विभाग द्वारा न तो नियमित जांच की गई है और न ही स्वच्छता को लेकर कोई ठोस कदम उठाया गया है।सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार कई दुकानों में मिठाइयों को खुले में रखा जा रहा है। खुले में रखी जा रही मिठाइयां धूल, कीटाणु और प्रदूषण के सीधे संपर्क में आ रही हैं, जिससे उपभोक्ताओं के स्वास्थ्य पर गंभीर खतरा मंडरा सकता है। नागरिकों का कहना है कि दीपावली जैसे बड़े त्यौहार में अन्न औषधि प्रशासन की जिम्मेदारी बढ़ जाती है, लेकिन विभाग की लापरवाही से स्थिति चिंताजनक हो गई है।

स्थानीय नागरिकों ने मांग की है कि विभाग तत्काल सक्रिय होकर सभी मिठाई दुकानों की नियमित और सघन जांच करे तथा नियमों का उल्लंघन करने वालों पर कड़ी कार्रवाई की जाए। नागरिकों का यह भी कहना है कि त्योहारों में इस तरह की लापरवाही किसी बड़े स्वास्थ्य संकट को जन्म दे सकती है।अब देखना होगा कि विभाग की कार्रवाई केवल कागजों तक सीमित रहती है या वास्तव में मिठाइयों की दुकानों पर सख्ती से नियम लागू किए जाते हैं। नागरिकों की निगाहें प्रशासन पर टिकी हुई हैं।

भुसावल रेल मंडल की यात्रियों से अपील

रेल यात्रा के दौरान विस्फोटक, ज्वलनशील या खतरनाक वस्तुएं साथ न रखें

अकोला-

यात्रियों की सुरक्षा और संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए मध्य रेलवे विभाग भुसावल डिव्हीजन ने सभी यात्रियों से विशेष अपील की है कि वे रेल यात्रा के दौरान किसी भी प्रकार के विस्फोटक, ज्वलनशील या खतरनाक पदार्थ अपने साथ न रखें। ऐसा करना न केवल रेलवे अधिनियम के तहत दंडनीय अपराध है, बल्कि इससे यात्रियों के जीवन को भी गंभीर खतरा हो सकता है।रेलवे अधिनियम १९८९ की धारा १६४ के अनुसार, यदि कोई यात्री रेलगाड़ी में प्रतिबंधित ज्वलनशील या खतरनाक वस्तु के साथ यात्रा करता पाया जाता है तो उसके विरुद्ध कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी। इस अपराध के लिए तीन वर्ष तक का कारावास, जुर्माना या दोनों हो सकते हैं। इतना ही नहीं, ऐसी लापरवाही के कारण यदि कोई दुर्घटना घटित होती है तो संबंधित व्यक्ति पर और भी सख्त दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी।यात्रियों में सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए भुसावल रेल मंडल द्वारा लगातार जनजागरण अभियान चलाए जा रहे हैं। इसके तहत स्टेशनों पर पोस्टर, बैनर, उद्घोषणाएं और विशेष प्रचार के माध्यम से लोगों को चेताया जा रहा है कि वे पेट्रोल, डीज़ल, गैस सिलेंडर, पटाखे, केरोसिन आदि ज्वलनशील पदार्थ साथ लेकर यात्रा न करें।रेलवे सुरक्षा बल , सरकारी रेलवे पुलिस और वाणिज्य विभाग द्वारा स्टेशन परिसरों और ट्रेनों में नियमित जांच अभियान चलाया जा रहा है। यात्रियों के सामान की अनियमित जांच (रैंडम चेकिंग) भी की जा रही है ताकि किसी भी प्रकार की खतरनाक वस्तु को रोका जा सके।रेलवे प्रशासन ने यात्रियों से अपील की है कि यदि किसी सहयात्री के पास संदिग्ध या खतरनाक वस्तु दिखाई दे तो तुरंत नजदीकी रेलवे कर्मचारी को सूचित करें या रेलवे हेल्पलाइन नंबर १३९ पर संपर्क करें।रेलवे प्रशासन का कहना है कि यात्रियों की सतर्कता और सहयोग से ही सुरक्षित और निर्बाध यात्रा संभव है। 'रेल यात्रा सभी की सुरक्षा की जिम्मेदारी है, इसमें आपका भी योगदान जरूरी है,' ऐसा संदेश रेलवे द्वारा दिया गया है।

नगर निगम उर्दू माध्यमिक विद्यालय के शिक्षक नईम फराज को राज्य स्तरीय आदर्श शिक्षक सम्मान

नगर आयुक्त एवं प्रशासक के हाथों सम्मान समारोह

अकोला-

महाराष्ट्र उर्दू अकादमी की ओर से वर्ष २०२३ के लिए मालीपुरा स्थित नगर निगम उर्दू बालक विद्यालय क्रमांक आठ के वरिष्ठ शिक्षक, लेखक, कवि व शायर नईम फराज को राज्य स्तरीय आदर्श शिक्षक सम्मान से सम्मानित किया गया। वर्ष २०१९ के बाद यह दूसरा राज्य स्तरीय सम्मान है जो उन्हें शैक्षणिक क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान, विद्यार्थियों में सृजनशीलता प्रोत्साहित करने तथा उर्दू भाषा के संवर्धन के लिए दिया गया। इस उपलब्धि के उपलक्ष्य में आज नगर निगम कार्यालय में एक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें नगर आयुक्त एवं प्रशासक डॉ. सुनिल लहाने ने नईम फराज को विशेष रूप से सत्कारित किया और शिक्षा तथा भाषा के प्रति उनके योगदान की प्रशंसा की। आयुक्त ने उपस्थित जनों को उर्दू भाषा के संरक्षण और प्रसार के महत्व पर प्रकाश डालते हुए मार्गदर्शन भी दिया।

समारोह में नगर उप आयुक्त विजय पारतवार, दिलीप जाधव, सहायक आयुक्त विठ्ठल देवकते, देविदास निळकजे, राजेश सरप, नगर शिक्षण अधिकारी हरीशचंद्र इटकर, निजी सहायक जितेंद्र तिवारी, नगररचना विभाग के संदीप गावंडे, क्षेत्रीय अधिकारी गजानन घोंगे, चुनाव विभाग प्रमुख अनिल बिडवे, नगर वैद्यकीय अधिकारी डॉ. अनुप चौधरी, जनसंपर्क अधिकारी भरत शर्मा, कनिष्ठ अभियंता आकाश शिवनीवार, संजय खराटे, अन्वर हुसैन, सुशीला सोनोने तथा अन्य गणमान्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का प्रारम्भिक विचार तथा आभार प्रदर्शन नगर शिक्षण अधिकारी हरीशचंद्र इटकर ने किया। उपस्थित सभी अधिकारियों, कर्मचारियों तथा नागरिकों ने नईम फराज को हार्दिक अभिनन्दन दिया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

शिक्षक मतदारसंघ चुनाव

मुख्याध्यापकों की कार्यशाला में मतदाता पंजीकरण पर मार्गदर्शन

अकोला-

अमरावती संभाग में होने वाले शिक्षक विधान परिषद चुनाव के लिए १ नवंबर २०२५ की पात्रता तिथि के आधार पर मतदाता सूची को नए सिरे से तैयार करने का कार्यक्रम घोषित किया गया है। इसी के तहत माध्यमिक और उससे ऊपर दर्जे के विद्यालयों के मुख्याध्यापकों की कार्यशाला नियोजन भवन में आयोजित की गई। अकोला जिले के सभी पात्र शिक्षकों से अपील की गई है कि वे निर्धारित नमूना-१९ में आवेदन पत्र आवश्यक प्रमाणपत्रों और दस्तावेजों के साथ भरकर जमा करें। मतदाता सूची का काम पूरी तरह से और समय पर संपन्न हो सके इसके लिए मुख्याध्यापकों से सहयोग करने का आग्रह किया गया। इस अवसर पर उप जिला निर्वाचन अधिकारी महेश परांडेकर ने मार्गदर्शन किया। उन्होंने शिक्षक मतदारसंघ के लिए मतदाता सूची तैयार करने की प्रक्रिया और समय-सारणी की विस्तृत जानकारी दी। Representation of the People Act १९६० की धारा ३१(३) के अनुसार अधिसूचना ३० सितंबर को जारी की गई थी। इसकी पहली पुनर्प्रसिद्धि १५ अक्टूबर को और दूसरी पुनर्प्रसिद्धि २५ अक्टूबर को की जाएगी। नमूना-१९ के माध्यम से आवेदन स्वीकार करने की अंतिम तिथि ६ नवंबर निर्धारित की गई है। हस्तलिखित सूची तैयार करने और प्रारूप मतदाता सूची की छपाई २० नवंबर को होगी। प्रारूप मतदाता सूची का प्रकाशन २५ नवंबर को किया जाएगा। दावे और आपत्तियाँ २५ नवंबर से १० दिसंबर तक स्वीकार की जाएंगी। दावे और आपत्तियों का निपटारा कर पूरक सूची तैयार करने और उसकी छपाई की तारीख २५ दिसंबर तय की गई है।

भारतीय संविधान विश्व की सर्वश्रेष्ठ राष्ट्रीय संहिता- नवसागरे

बाबूजी देशमुख वाचनालय के व्याख्यानमाला का समापन

अकोला-

भारतीय संविधान के निर्माण के साथ ही भारत के आसपास के देशों के संविधान भी बने. इनमें पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल आदि के संविधान बने और कुछ ही समय में निरस्त कर दिए गए. हालाँकि, ७५ वर्षों के बाद भी, हमारा संविधान पूरी तरह अक्षुण्ण है और वास्तव में राष्ट्र की राष्ट्रीय संहिता बन गया है, ऐसा पुणे के व्याख्याता नितीश नवसागरे ने कहा. बाबूजी देशमुख वाचनालय की ओर से स्थानीय प्रमिलाताई ओक सभागार में रविवार को आयोजित व्याख्यानमाला के समापन सत्र में, नवसागरे ने भारतीय संविधान के ७५ वर्ष विषय पर अपना अंतिम व्याख्यान प्रस्तुत किया.उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, जवाहरलाल नेहरू, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है. संविधान निर्माण के संदर्भ में इन चारों व्यक्तियो का महत्व बहुत अधिक है.क्योंकि संविधान ने प्रजा को नागरिक में परिवर्तित किया. इससे नागरिकों को इस देश का मालिक बनाया. २१ वर्ष के व्यक्ति को सरकार चुनने का अधिकार दिया गया.जाति, धर्म, पंथ या लिंग के आधार पर बिना किसी भेदभाव के सभी को समान अधिकार दिए गए और देश को लोकतांत्रिक बनाया गया. भारतीय संविधान ने देश को मजबूत और संप्रभु बनाया.दूसरी ओर, भारतीय संविधान के निर्माण के दौरान ही पाकिस्तान का संविधान बना. हालाँकि, वहाँ के संविधान को अमान्य घोषित कर दिया गया और कई बार बदला गया.इसी प्रकार, १९७१ में बांग्लादेश का संविधान बदला गया. इसी प्रकार, नेपाल में राजतंत्र था, फिर लोकतंत्र आया, फिर राजतंत्र बना और संविधान में कई बार बदलाव किए गए. हालाँकि, भारत के संविधान में अभी तक बदला नहीं गया है, केवल इसमें संशोधन किए गए हैं.भारतीय संविधान के मौलिक और शाश्वत संदर्भ में, उन्होंने कहा कि भले ही भारत विविध जातियों और जनजातियों, दुनिया की कई भाषाओं, बोलियों और संस्कृतियों वाला एक महाद्वीप है, और ५०० रियासतों को समाप्त करके एक अखंड देश बन गया है, लेकिन संविधान बहुत मजबूत और समावेशी है और सभी नागरिकों को सार्वभौमिक अधिकार देता है. उन्होंने कहा कि यह इस संविधान का एक महान परिणाम है.उन्होंने कहा कि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने कहा था कि बिना किसी रक्तरंजित क्रांति के शिवाय होनेवाला सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन ही सच्चा लोकतंत्र है. इसी प्रकार, संविधान की प्रस्तावना में आम नागरिक को केंद्र में रखकर 'हम भारत के लोग' कहते हुए प्रस्तावना प्रस्तुत की गयी हैं और इस माध्यम से भारतीय संविधान को दुनिया के सभी संविधानों से श्रेष्ठ कर दिया गया है. नवसागरे ने ऐसे और कई उदाहरण देकर संविधान के मूल्य की पुष्टि की.

CMYK CMYK CMYK